

Karamate Shere Khuda (Gujarati)



کرامت شہر خدا  
و کرامت الکریم

# કરામાતે શેરે ખુદા

(મઅ ગૈરુલ્લાહ સે મદદ માંગને કે બારે મેં સુવાલ જવાબ)



رحمٰني الله  
صالحني عند

મઝારે મૌલા અલી

સૈમે તરીકત સારીં અફલે સુખત હામિલે હા' પો જવાબી, હાજત અલકામ મૌલાના અબૂ મિસબ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ૨-ઝવી

مكتبة الرينه  
(1438H)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## किताब पढने की हुआ

अज : शैभे तरीकत, अभीरे अडले सुन्नत, बानिये दा'वते  
ईस्लामी, उजरत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद

ईल्यूस अत्तार कादिरि २-उवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

दीनी किताब या ईस्लामी सबक पढने से पहले जैल  
में दी हुई हुआ पढ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढेंगे याद  
रहेगा. हुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ओ अल्लाह एَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्म व हिकमत के  
दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाजिल करमा !

ओ अ-उमत और बुजुर्गी वाले ! (المُستطَرَف ج ١ ص ٤٠١ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आबिर अक अक बार हुइइ शरीफ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना

व अकीअ

व मकिरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.







करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रडमते बेजता है. (स्)

## कटा हुवा हाथ जोड दिया

अक हब्शी गुलाम जो के अमीरुल मुअमिनीन हैदरे करार, साहिबे जुल फ़िकार, ह-सनैने करीमैन के वालिदे बुजुर्ग-वार, हजरते मौला मुश्किल कुशा अलिय्युल मुर्तजा शेरे फुदा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ) से बहुत महब्बत करता था, शामते आ'माल से उस ने अक मर्तबा योरी कर ली. लोगों ने उस को पकड कर दरबारे बिलाइत में पेश कर दिया और गुलाम ने अपने जुर्म का इकरार भी कर लिया. अमीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ) ने हुकमे शर-ई नाफ़िज करते हुअे उस का हाथ काट दिया. जब वोह अपने घर को रवाना हुवा तो रास्ते में हजरते सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और इब्नुल कव्वाअ رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ से मुलाकात हो गई. इब्नुल कव्वाअ ने पूछा : "तुम्हारा हाथ किस ने काटा?" तो गुलाम ने कहा : "अमीरुल मुअमिनीन व या'सूबुल मुस्लिमीन व जौजे बतूल (كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ) ने." इब्नुल कव्वाअ ने हैरत से कहा : "उन्हों ने तुम्हारा हाथ काट डाला फिर भी तुम इस कदर अ'जाजो इकराम के साथ उन का नाम लेते हो!" गुलाम ने कहा : "मैं उन की ता'रीफ़ क्यूं न करूं! उन्हों ने हक पर मेरा हाथ काटा और मुजे अजाबे जहन्नम से बचा लिया." हजरते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने दोनों की गुफ़्त-गू सुनी और हजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा (كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ) से इस का तजक़िरा किया तो आप (كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ) ने उस गुलाम

કરમાને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો શબ્દ મુઝ પર દુરુદ પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્મત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (طرائق)

કો બુલવાયા ઓર ઉસ કા કટા હુવા હાથ કલાઈ પર રખ કર રુમાલ સે ઘુપા દિયા ફિર કુછ પઢના શુરૂઅ કર દિયા, ઇતને મેં એક ગૈબી આવાઝ આઈ : “કપડા હટાઓ.” જબ લોગોં ને કપડા હટાયા તો ગુલામ કા કટા હુવા હાથ કલાઈ સે ઈસ તરહ જુડ ગયા થા કે કહીં કટને કા નિશાન તક નહીં થા ! (تفسير كبير ج ٧ ص ٤٣٤)

એ શબે હિજરત બજાએ મુસ્તફા પર રખ્તે ખ્વાબ

એ દમે શિદત ફિદાએ મુસ્તફા ઈમદાદ કુન

(હદાઈકે બખ્શિશ શરીફ)

શહેં કલામે રઝા : એ હિજરત કી રાત સરવરે કાએનાત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કે મુબારક બિછોને પર લેટને વાલે ! એ એસે સખ્ત ઈમ્તિહાન કે લમ્હાત મેં શહન્શાહે મૌજૂદાત صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ પર જાન કા નઝરાના હાઝિર કરને વાલે ! મેરી ઈમદાદ ફરમાઈયે.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

### કરામત કી તા'રીફ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! દેખા આપ ને ! મૌલા મુશ્કિલ કુશા શેરે ખુદા كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ને અપને રબ્બે અઝીમ عَزَّوَجَلَّ કે ફઝલે અમીમ સે કિસ તરહ અપને ગુલામ કા કટા હુવા બાઝૂ જોડ દિયા ! બેશક રબ્બે કાએનાત عَزَّوَجَلَّ અપને મકબૂલ બન્દોં કો તરહ તરહ કે ઈખ્તિયારાત સે નવાઝતા હૈ ઓર ઉન સે એસી બાતેં સાદિર હોતી હેં જિન્હેં ઈન્સાની અક્લેં સમઝને સે કાસિર હોતી હેં. બા'ઝ અવકાત શૈતાન કે વસ્વસે મેં આ કર બા'ઝ નાદાન કરામાત કો

करमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइरे पाक न पढा तलक़ीक़ वोह बढे अप्त हो गया. (उंन)

अकल के तराजू में तोलने लगते हैं और यूं गुमराह हो जाते हैं. याद रभिये ! करामत कहते ही उस भिर्के आदत बात को जो आदतन मुहाल या'नी आहिरि अस्बाब के जरीअे उस का आहिर होना मुम्किन न हो. दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सइहात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" जिल्द अक्वल सइहा 58 पर सदरुशशरीअह, बहरुत्तरीकह उजरते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'उमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَعُوبِي करमाते हैं : नबी से कबल अज् अे'लाने नुबुव्वत ऐसी थीजें आहिर हों तो उन को ईरहास कहते हैं और अे'लाने नुबुव्वत के बा'द साहिर हों तो मो'जिआ कहते हैं, आम मुअमिनीन से अगर ऐसी थीजें आहिर हों तो उसे मउिनत और वली से आहिर हों तो करामत कहते हैं नीज कफ़िर या इासिक से कोई भिर्के आदत आहिर हो तो उसे ईस्तिद्राज कहते हैं.

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 58 मुलफ्फसन)

अकल को त-कीद से इुरसत नहीं

ईशक पर आ'माल की बुन्याद रख

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**दरिया की तुग्यानी जल्म हो गध**

अेक मर्तबा नहरे इुरात में ऐसी फौइनाक तुग्यानी आ गध (या'नी तूइान आ गया) के सैलाब में तमाम फेतियां गरकाब हो (या'नी डूब) गध लोगों ने उजरते सय्यिदुना अदिय्युल मुर्तजा, शेरे फुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ की बारगाहे बेकस पनाह में इरियाद की. आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ फौरन उठ

﴿ ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : جیس نے મુઝ પર દસ મરતબા સુબહ ઓર દસ મરતબા શામ દુરુદ પાક પઢા ﴾  
 ﴿ ઉસે ક્રિયામત કે દિન મેરી શકાઅત મિલેગી. ﴾ (مُعْتَبَرَات)

ખડે હુએ ઓર રસૂલુલ્લાહ صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم કા જુબબએ મુબા-રકા વ ઈમામએ મુકદ્દસા વ ચાદરે મુબા-રકા ઝાંબે તન ફરમા કર ઘોડે પર સુવાર હુએ, હઝરાતે હ-સનૈને કરીમૈન رَضِيَ اللہُ تَعَالَى عَنْهُمَا ઓર દીગર કઈ હઝરાત ભી હમરાહ ચલ પડે. ફુરાત કે કનારે આપ کَرَّمَ اللہُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْکَرِيمُ ને દો રક્અત નમાઝ અદા કી, ફિર પુલ પર તશરીફ લા કર અપને અસા સે નહરે ફુરાત કી તરફ ઈશારા ક્રિયા તો ઉસ કા પાની એક ગઝ કમ હો ગયા, ફિર દૂસરી મરતબા ઈશારા ફરમાયા તો મઝીદ એક ગઝ કમ હુવા જબ તીસરી બાર ઈશારા ક્રિયા તો તીન ગઝ પાની ઉતર ગયા ઓર સૈલાબ ખત્મ હો ગયા. લોગોં ને ઈલ્તિજા કી : **یا અમીરલ મુઅમિનીન! બસ કીજિયે યેહી કાફી હૈ.** (شواهدُ النَّبوةِ ص ۲۱۴)

શાહે મદઈ શેરે યઝદાં કુવ્વતે પરવર દગાર  
 લા ફતા ઈલ્લા અલી, લા સૈ-ફ ઈલ્લા ઝુલ ફિકાર  
 صَلَّوْا عَلَی الْحَبِيبِ! صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّد

### ચશ્મા ઉબલ પડા !

મકામે સિફફીન જાતે હુએ હઝરતે સય્યિદુના અલિય્યુલ મુર્તઝા, શેરે ખુદા کَرَّمَ اللہُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْکَرِيمُ કા લશ્કર એક ઐસે મૈદાન સે ગુઝરા જહાં પાની નહીં થા, પૂરા લશ્કર પ્યાસ કી શિદ્દત સે બેતાબ હો ગયા. વહાં એક ગિર્જા ઘર થા, ઉસ કે રાહિબ ને બતાયા કે યહાં સે દો ફરસખ (યા'ની તકરીબન 14 કિલો મીટર) કે ફાસિલે પર પાની મિલ સકેગા. કુછ હઝરાત ને વહાં જા કર પાની પીને કી ઈજાઝત તલબ કી, યેહ સુન કર આપ کَرَّمَ اللہُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْکَرِيمُ અપને ખચ્ચર પર સુવાર હો ગએ

करमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस क पास मेरा ठिक हुवा और उस ने मुज पर दुरद शरीक न पढा उस ने जइ की. (عمرالزات)

और अक जगह की तरफ़ ईशारा कर के फोदने का हुकम इरमाया, फुदाई शुइअ हुई, अक पथर जाहिर हुवा, उसे निकालने की तमाम तर कोशिशें नाकाम हो गई, येह देख कर मौला मुश्किल कुशा मुश्किल कुशा सुवारी से उतरे और दोनों हाथों की उंगलियां उस पथर की दराउ में डाल कर जोर लगाया तो वोह पथर निकल पडा और उस के नीचे से अक निहायत साफ़ी शफ़ाफ़ और शीरी (या'नी भीठे) पानी का यश्मा उबल पडा ! और तमाम लश्कर उस से सैराब हो गया. लोगों ने अपने ज़नवरों को भी पिलाया और मश्कीले भी लभर लिये, फिर आप مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने वोह पथर उस की जगह पर रभ दिया. गिर्ज घर का ईसाई राहिल येह करामत देख कर मौला मुश्किल कुशा मुश्किल कुशा की फिदमत में अर्ज गुजार हुवा : क्या आप नबी हैं ? इरमाया नहीं. पूछा : क्या आप फिरिश्ते हैं ? इरमाया : नहीं. उस ने कहा : फिर आप कौन हैं ? इरमाया : मैं पैगम्बरे मुसल्ल उजरते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह आ-तमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का सहाबी हूं और मुज को ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने यन्द् बातों की वसियत भी इरमाई है. ईतना सुनते ही वोह ईसाई राहिल कलिमा शरीफ़ पढ कर मुशर्रफ़ ब ईस्लाम हो गया. आप مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : तुम ने ईतनी मुद्दत तक ईस्लाम कयूं कबूल नहीं किया था ? राहिल ने कहा : हमारी किताबों में येह लिखा हुवा है के ईस गिर्ज घर के करीब पानी का अक यश्मा पोशीदा है, ईस यश्मे को वोही शप्स जाहिर करेगा जो नबी होगया या नबी का सहाबी. युनान्चे मैं और मुज से पडले बहूत से राहिल ईस गिर्ज घर में ईसी ईन्तिजार में मुकीम रहे. आज आप مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने

करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जो मुज पर रोज़े जुमुआ दुइद शरीफ़ पडेगा मे कियामत के दिन उस की शकाअत करेगा. (कोब्राल)

येह यश्मा जाहिर कर दिया तो मेरी मुराद भर आई इस लिये मैं ने दीने ईस्लाम कबूल कर लिया. राखिब का बयान सुन कर शेरे फुदा **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ** रो पडे और इस कदर रोअे के रीश मुबारक आंसूओं से तर हो गई, फिर ईशाद फरमाया: **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** के ईन लोगों की किताबों में भी मेरा जिक है. येह राखिब मुसल्मान हो कर आप **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ** के जादिमों और मुजाहिदों में शामिल हो गया और शामियों से जंग करते हुअे शहीद हो गया और मौला मुश्किल कुशा ने अपने दस्ते मुबारक से उसे दफ़न किया और उस के लिये मग़ि़रत की दुआ फरमाई.

(मुलफ्फस अज करामाते सहाबा, स. 114, २१६, **شواهد النبوة**ص)

मूर्तजा शेरे फुदा, मरहब कुशा, ज़ैबर कुशा

सरवरा लश्कर कुशा मुश्किल कुशा ईमदाद कुन

(हदाईके बफ़िश शरीफ़)

**शहूँ कलामे रजा**: अै मूर्तजा (या'नी पसन्दीदा व मकबूल)! अै अद्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के शेर, अै मरहब (मरहब बिन हारिस नामी यलूदी, अरब के नामवर पहलवान और कब्अअे ज़ैबर के रईसे आ'जम) को पछाउने वाले! अै फ़ातेहे ज़ैबर! अै मेरे सरदार! अै तने तन्हा दुश्मन के लश्कर को शिकस्त देने वाले! अै मुश्किलात हल फरमाने वाले! मेरी ईमदाद फरमाईये.

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

**झालिज मदा अखा हो गया**

अेक मर्तबा अमीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना अलियुल मूर्तजा शेरे फुदा **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ** अपने दोनों

﴿(ابو یونس)﴾ इरमाने मुस्तफा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज पर दुवदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है.

शहजादों हजरते सख्खिदुना एमामे हसन व एमामे हुसैन के साथ ह-रमे का'बा में हाजिर थे के देभा वहां अक शप्स भूब रो रो कर अपनी हाजत के लिये दुआ मांग रहा है. आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने हुकम दिया के उस शप्स को मेरे पास लाओ. उस शप्स की अक करवट यूंके फ़ालिज जदा थी लिहाजा जमीन पर घिसटता हुवा हाजिर हुवा, आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने उस का वाकिआ दरयाफ़त इरमाया तो उस ने अर्ज की : या अमीरल मुअमिनीन ! मैं गुनाहों के मुआ-मले में निहायत बेबाक था, मेरे वालिदे मोहतरम जो के अक नेक व सालेह मुसल्मान थे, मुजे बार बार टोकते और गुनाहों से रोकते थे, अक दिन वालिदे माजिद की नसीहत से मुजे गुस्सा आ गया और मैं ने उन पर हाथ उठा दिया ! मेरी मार भा कर वोह रन्जो गम में डूबे हुअे ह-रमे का'बा में आये और उन्हों ने मेरे लिये बढ दुआ कर दी, उस दुआ के असर से अयानक मेरी अक करवट पर फ़ालिज का हम्ला हो गया और मैं जमीन पर घिसट कर चलने लगा. इस गैबी सजा से मुजे बडी एभ्रत हासिल हुई और मैं ने रो रो कर वालिदे मोहतरम से मुआफ़ी मांगी, उन्हों ने शफ़कते पि-दरी से मग्लूब हो कर मुज पर रहम भाया और मुआफ़ कर दिया. फिर इरमाया : “बेटा चल ! मैं ने जहां तेरे लिये बढ दुआ की थी वही अब तेरे लिये सिद्धत की दुआ मांगूंगा.” युनान्थे हम बाप बेटे ओंटनी पर सुवार हो कर के मक्कअे मुअज़्जमा اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا आ रहे थे के रास्ते में यकायक ओंटनी बिदक कर भागने लगी और मेरे वालिदे माजिद उस की पीठ पर से गिर कर दो यद्दानों के दरमियान वफ़ात पा गये. اِنَّ اللّٰهَ وَاِنَّا اِلَيْهِ لَرٰجِعُونَ

करमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : तुम जहां भी हो मुझ पर दूरदूरे पढ़ो के तुम्हारा दूरदूरे मुझ तक पहुँचता है. (गुरान)

अब मैं अकेला ही ह-रमे का'बा में छाजिर हो कर दिन रात रो रो कर फुदा तआला से अपनी तन्दुरुस्ती के लिये दुआओं मांगता रहता हूँ. अभीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा शेरे फुदा अमीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा शेरे फुदा को उस की दास्ताने ध्रत निशान सुन कर उस पर बडा रहम आया और इरमाया : “अै शप्स ! अगर वाकेई तुम्हारे वालिद साखिब तुम से राजी हो गये थे तो ईत्मीनान रभो ان شاء الله सब बेहतर हो जायेगा.” फिर आप अमीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा शेरे फुदा ने यन्द रकअत नमाज पढ कर उस के लिये दुआये सिद्धत की फिर इरमाया : “يا'नी बडा हो !” येह सुनते ही वोह बिला तकल्लुफ उठ कर बडा हो गया और चलने फिरने लगा. (ملخص از حجة الله على العالمين ص ٦١٤)

क्यूं न मुश्किल कुशा कडूं तुम को

तुम ने बिगडी मेरी बनाई है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### औलाहे अली के साथ हुस्ने सुलूक का भदला

अबू ज़ा'इर नामी अेक शप्स कूफ़ा में रहता था, लैन दैन के मुआ-मले में वोह हर अेक के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आता था, बिल फुसूस औलाहे अली का कोई इर्द उस के यहां कुछ भरीदारी करता तो वोह जितनी भी कम कीमत अदा करता कबूल कर लेता वरना उजरते मौला अली शेरे फुदा अमीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा शेरे फुदा के नाम कर्ज लिख देता. गर्दिशे दौरां के बाईस वोह मुफ़लिस हो गया. अेक दिन वोह घर के दरवाजे पर बैठा था के अेक आदमी उधर से गुजरा, और उस ने मजाक उडाते हुअे कहा : “तुम्हारे भडे मकरज़ (या'नी उजरते मौला अली शेरे फुदा अमीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा शेरे फुदा) ने कर्जा अदा

करमाने मुस्तकः صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर इस भरतभा दुइदे पाक पढा अदलाह غَزْوَجْ उस पर सो रडभते नाजिल करमाता है. (طبرانی)

किया या नहीं?” उस को इस तन्ज का सप्त सदमा हुवा. रात जब सोया तो प्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की जियारत से शरफ याब हुवा, उ-सनैने करीमैन (या'नी हसन व हुसैन) صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उमराह थे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने शहजादगान से दरयाफ्त किया : “तुम्हारे वालिद साहिब का क्या हाल है?” उजरते मौला अली शेरे फुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने पीछे से जवाब दिया : या रसूलदलाह ! मैं हाजिर हूँ. ईशाद हुवा : “क्या वजह है के इस का उक अदा नहीं करते?” उन्हों ने अर्ज की : “या रसूलदलाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मैं रकम उमराह लाया हूँ.” इरमाया : इस के उवाले कर दो. उजरते मौला अली शेरे फुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने अक उनी थेली उन के उवाले कर दी और इरमाया : “येह तुम्हारा उक है.” रसूले मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : “ईसे वुसूल कर लो और इस के बा'द भी इन की औलाद में से जो कर्ज लेने आये उस को महइम न लौटाना, आज के बा'द तुम्हें इकरो झाका और मुइलिसी व तंगदस्ती की शिकायत नहीं होगी.” जब बेदार हुवा तो वोह थेली उस के हाथ में थी ! उस ने अपनी बीवी को बुला कर कहा : येह तो बताओ के मैं सोया हुवा हूँ या जाग रहा हूँ ? उस ने कहा : “आप जाग रहे हैं.” वोह फुशी के मारे झूला नहीं समाता था, सारा किस्सा अपनी जौजअे मोह-त-रमा से बयान किया, जब मकइजों की इेहरिस्त देषी तो उस में उजरते मौला अली शेरे फुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم के नाम उर्रा भर कर्जा बाकी नहीं था. (या'नी इेहरिस्त से वोह तमाम लिखा हुवा कर्जा साइ हो युका था)

કરમાને મુસ્તફા: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिंक हो और वोड़ मुज पर दुइद शरीफ न पड़े तो वोड़ लोगों में से कन्वूस तरीन शप्स है. (ज़ीब)

अली के वासिते सूरज को ફेरने वाले  
 ઇશારા કર દો કે મેરા ભી કામ હો જાયે  
 صَلَّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### નામ વ અલ્કાબ

અમીરુલ મુઅમિનીન હઝરતે સય્યિદુના મૌલા અલી મુશિકલ કુશા શેરે ખુદા **كَرَّمَ اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا مَكَرَّرَ مَا** મક્કતુલ મુકર્રમા ડાઢાહા શેરે ખુદા **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** કૃશા શેરે ખુદા કૃશા શેરે ખુદા મેં પૈદા હુએ. આપ **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** કી વાલિદએ માજિદા હઝરતે સય્યિ-દતુના ફાતિમા બિન્તે અસદ **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** ને અપને વાલિદ કે નામ પર આપ કા નામ “હેદર” રખા, વાલિદ ને આપ **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** કા નામ “અલી” રખા. હુઝૂરે પુરનૂર, શાફેએ યૌમુન્નુશૂર **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ને આપ **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** કો “અ-સદુલ્લાહ” કે લકબ સે નવાજા, ઇસ કે ઇલાવા “મુર્તઝા (યા’ની યુના હુવા)”, “કરાર (યા’ની પલટ પલટ કર હચ્લે કરને વાલા)”, “શેરે ખુદા” ઓર “મૌલા મુશિકલ કુશા” આપ **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** કે મશહૂર અલ્કાબાત હેં. આપ **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** મક્કી મ-દની આકા મીઠે મીઠે મુસ્તફા **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** કે યયાઝાદ ભાઈ હેં.

(મિરઆતુલ મનાજીહ, જિ. 8, સ. 412 વગેરા મુલખખસન)

### હઝરતે અલી કા મુખ્તસર તઆરુફ

પલીફએ યહારુમ, જા નશીને રસૂલ, ઝૌજે બતૂલ હઝરતે સય્યિદુના અલી બિન અબી તાલિબ **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** કી કુન્યત “અબુલ હસન” ઓર “અબૂ તુરાબ” હે. આપ **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** શહન્શાહે

करमान मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : उस शप्स की नाक फाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिंक हो और वो हो मुज पर दुइदे पाक न पड़े. (माम)

अबरार, मक्के मदीने के ताजदार صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के यया अबू तालिब के इरजन्टे अरजुमन्द हैं. **आमुल इील<sup>1</sup>** के 30 साल बा'द (जब हुजूर नबिये अकरम صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की उम्र शरीफ 30 बरस थी) 13 र-जबुल मुरज्जब बरोज जुमुअतुल मुबारक हजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्ताजा, शेरे फुदा كريم الله تعالى وجهه الكريم फानअे का'बा शरीफ رَأَادَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا के अन्दर पैदा हुअे.<sup>2</sup> मौला मुश्किल कुशा हजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्ताजा كريم الله تعالى وجهه الكريم की वालिदअे माजिदा का नाम हजरते सय्यि-दतुना इातिमा बिन्ते असद رضى الله تعالى عنها है. आप كريم الله تعالى وجهه الكريم 10 साल की उम्र में ही दाईरअे ईस्लाम में दाबिल हो गअे थे और शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत, शाईअे उम्मत صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के जेरे तरबिय्यत रहे और ता दमे हयात आप صلى الله تعالى عليه وآله وسلم की ईमदाद व नुसरत और दीने ईस्लाम की डिमायत में मसइके अमल रहे. आप كريم الله تعالى وجهه الكريم मुहाजिरीने अव्वलीन और अ-श-रअे मुबशशरह में शामिल होने और दीगर फुसूसी द-रजात से मुशररफ होने की बिना पर बहुत जियादा मुमताज हैसिय्यत रफते हैं. गज्जवअे अद्र, गज्जवअे उहुद, गज्जवअे फन्दक वगैरा तमाम ईस्लामी जंगों में अपनी बे पनाह शुजाअत के साथ शिकत इरमाते रहे और कुइइर के अडे अडे नामवर अहादुर आप كريم الله تعالى وجهه الكريم की तलवारे जुल इिकार के काहिराना वार से वासिले नार हुअे. **अमीरुल मुअमिनीन** हजरते सय्यिदुना उस्माने गानी رضى الله تعالى عنه की शहादत

1 : या'नी जिस साल ना मुराद व ना हन्जर अब-रहा बादशाह हाथियों के लशकर के हमराह का'बअे मुशररफा पर हम्बा आवर हुवा था. ईस वाकिअे की तइसील जानने के लिये मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ किताब "अजाईबुल कुरआन मअ गराईबुल कुरआन" का मुता-लआ कीजिये. 2 : १०११ ॥ حدیث ६४ ॥

करमाने मुस्तफा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم: जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुबदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होगे. (क़रामात)

के बा'द अन्सार व मुहाजिरीन ने दस्ते बा ब-र-कत पर बैअत कर के आप كريم الله تعالى وجهه الكريم को अभीरुल मुअमिनीन मुन्तअब क़िया और 4 बरस 8 माह 9 दिन तक मस्नदे षिलाफ़त पर रौनक अफ़रोज रहे. 17 या 19 र-मजानुल मुबारक को अेक ज़बीस पारिष्ठा के कातिलाना हम्ले से शदीद ज़हमी हो गये और 21 र-मजान शरीफ़ यक शम्बा (ईतवार) की रात ज़ामे शहादत नोश फ़रमा गये.

(تاريخ الخلفاء من اسد الغابة ج ٤ ص ١٢٨، ١٣٢، ازالة الخفاء ج ٤ ص ٤٠٥، معرفة الصحابة ج ١ ص ١٠٠ وغيره)

अस्वे नस्वे सफ़ा वजडे वस्वे फुदा

बाबे फ़स्वे विलायत पे लाफ़ों सलाम

(हदाईके बफ़िशश शरीफ़)

**शरह क़लामे रज़ा :** हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा

كريم الله تعالى وجهه الكريم आलिस पाक सादात की ज़उ और बुन्याद हैं, वासिल बिल्हाड होने (या'नी अद्लाड एज़्ज़ज का मुक़र्रब बनने) का सभब और फ़ज़ाईले विलायत मिलने का दरवाज़ा हैं, आप كريم الله تعالى وجهه الكريم पर लाफ़ों सलाम हों.

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

**“क़रम़ अल्लु वज़हे अलक़रिम” कहने लिखने का सभब**

जब कुरैश मुअ्तलाअे कइत हुअे थे तो हुज़ूरे अकदस

صلى الله تعالى عليه وآله وسلم अबू तालिब पर तफ़्फ़ीफ़े ईयाल (या'नी बाल बरय्यों का बोज हलका करने) के लिये हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كريم الله تعالى وجهه الكريم को अपनी बारगाडे ईमान पनाह में ले आअे, हज़रते मौला अली كريم الله تعالى وجهه الكريم ने हुज़ूर मौलाअे कुल

करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुन पर दुरद शरीर पढो अल्लाह तुम पर रदमत लेजेगा. (अिन सदर)

सख्यिदुरसुल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के किनारे अकदस (या'नी आगोशे मुबारक) में परवरिश पाई, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की गोद में डोश संभाला, आंफ पुलते ही मुहम्मदुरसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का जमाले जहां आरा देभा, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ही की भाते सुनीं, आदते सीपीं. तो जब से इस जनाबे ईरफ़ान मआब को डोश आया कत्अन यकीनन रब एज़ुज को अेक ही जाना, अेक ही माना. हरगिज हरगिज बुतों की नजसत से इन का दामने पाक कभी आलूदा न हुवा. इसी लिये ल-कबे करीम “كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ” मिला. (इतावा र-अविय्या, जि. 28, स. 436) 10 बरस की उम्र में श-जरे ईस्लाम के साअे में आ गअे. नबिय्ये करीम, रउिहुरहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सभ से लाडली शहजादी हउरते सख्यि-दतुना इति-मतुज्जहरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की ही औजियत में आई. बडे शहजादे हउरते सख्यिदुना ईमामे हसन मुजतबा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की निस्बत से आप रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की कुन्यत “अबुल हसन” है और मदीने के सुल्तान, सरदारे दो जहान, रदमते आ-लमिय्यान, सरवरे जीशान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप को كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ “अबू तुराब” कुन्यत अता इरमाई. (تاريخ الخلفاء ص 132) हउरते सख्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा, शेरें फुढा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ को येह कुन्यत अपने अस्ली नाम से भी जियादा प्यारी थी. (بخارى ج 2 ص 530 حديث 3703)

**“अबू तुराब” कुन्यत कब और कैसे मिली !**

हउरते सख्यिदुना सहुल बिन सा'द رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं :

करमान मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: मुज़ पर कसरत से दुरेद पाक पढो बशक तुम्हारा मुज़ पर दुरेद पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज़्किरत है. (पृ. १०)

उज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा, शेरे फुदा. كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ  
 अक रोज़ शहजादिये कोनैन उज़रते सय्यि-दतुना इति-मतुज़्ज़ुहरा  
 एक रोज़ शहजादिये कोनैन उज़रते सय्यि-दतुना इति-मतुज़्ज़ुहरा  
 के पास गमे और इर मस्जिद में आ कर लैट गमे.  
 (उन के जाने के बाद) ताजदारे मदीनअे मुनव्वरउ, सुल्ताने मक्कअे  
 मुकर्मा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (घर तशरीफ़ लाअे और) बीबी इतिमा  
 से उन के बारे में पूछा. उनहों ने जवाब दिया के मस्जिद  
 में हैं. आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ ले गमे और मुला-उजा  
 इरमाया के (उज़रते) अली (كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ) पर से यादर उट  
 गई है, जिस की वजह से पीठ, मिट्टी से आलूदा है. रसूले करीम  
 عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ उन की पीठ से मिट्टी जाउने लगे और दो मर्तबा  
 इरमाया : يَا قُمْ أَبَا تُرَابٍ! अे अबू तुराब.

(بخاری ج ۱ ص ۱۶۹ حدیث ۴۴۱)

उस ने ल-कबे पाक शह-शाह से पाया

जो डैदरे करार के मौला है उमारा

(हदाईके बश्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

**लम्हे भर में कुरआन जत्म कर लेते**

उज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा, शेरे फुदा  
 كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ जब सुवारी करते वक्त घोडे की रिकाब में पाठि  
 रभते तो तिलावते कुरआन शुइअ करते और दूसरी रिकाब में पाठि  
 रभने से पडले पूरा कुरआने मज्जद जत्म इरमा लेते.

(شواهد النبوة ص ۲۱۲)

करमाने मुस्तकी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अक दुइद शरीफ पढता हे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये अक कीरात अज लिफता हे और कीरात उछुद पहाड जितना हे. (मुरादा)

## मौला अली की शान अ ठभाने कुरआन

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने सू-रतुल अ-करह की आयत नम्बर 274 में

ईशाद कुरमाया :

الَّذِينَ يَفْقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ  
وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ  
أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ  
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٤﴾

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : वोह जो अपने माल भैरात करते हैं रात में और दिन में, छुपे और जाहिर, उन के लिये उन का नेग (ईन्आम, डिस्सा) हे उन के रब के पास, उन को न कुछ अन्देशा छो न कुछ गम.

## यार हिरहम भैरात करने के 4 अन्दाज

सदरुल अफ़जिल हजरते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुदीन मुरादआभादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي “तईसीरे भजाईनुल ईरफ़ान” में ईस आयते मुभा-रका के तहत कुरमाते हैं : “अक कौल येह हे के येह आयत हजरते अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ के हक में नाजिल हुई जब के आप के पास इकत यार<sup>4</sup> हराहिम (यांही के सिक्के) थे और कुछ न था आप (كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ) ने उन यारों को भैरात कर दिया. अक रात में, अक दिन में, अक को पोशीदा (या’नी छुपा कर) और अक को जाहिर.”

सुपन आ कर यहाँ अत्तार का ईन्आम को पड़ोया  
तेरी अ-उमत पे नातिक अब ली हैं आयाते कुरआनी

(वसाईले बज्शिश, स. 498)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

करमाने मुस्तफ़ा: صلى الله تعالى عليه واله وسلم: जिस ने किताब में मुज पर दुरदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरशते उस के विधे इस्तिफ़ार करते रहेंगे. (प्रां.)

## हमारा भैरात करने का अन्दाज

سُبْحَانَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! क्या शान है अद्लाह के नेक बन्दों की !

जैसा के आप ने मुला-हजा इरमाया के वोह मावो दौलत जम्न करने के बजाओ इप्लास के साथ भैरात करना पसन्द इरमाते हैं. अमीरुल मुअमिनीन, नासिरुल मुस्लिमीन, पैकरे जूदो सभा, मौला मुश्किल कुशा, शेरे फुदा उतरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ के पास 4 दिरहम थे वोह सब राडे फुदा عَزَّوَجَلَّ में इस तरह भैरात किये के अेक दिन को, अेक रात को, अेक पोशीदा और अेक ज़ाहिर, के मा'लूम नहीं, कौन सा दिरहम राडे फुदा عَزَّوَجَلَّ में ज़ियादा कबूलिय्यत का शरफ़ पा कर रहमतों और ब-र-कतों की ला जवाल दौलत में मज़ीद इजाडे का सबब बन जाओ. दूसरी तरफ़ हमारी हालत येह है के अगर कभी स-दका व भैरात करने की हिम्मत कर ली तो कहां रिजाओ इलाही عَزَّوَجَلَّ की निख्यत.....! कैसा इप्लास और कहां की विद्लाडिय्यत.....! बस किसी तरह लोगों को मा'लूम हो जाओ के जनाब ने आज इतने रुपै भैरात कर डाले ! जब तक हमारे स-दका व भैरात को शोहरत न मिल जाओ करार नहीं आता, मस्जिद में कुछ दे दिया तो प्वाडिश होती है के इमाम साहिब नाम ले कर दूआ कर दें ताके लोगों को भेरे यन्दा देने का पता चल जाओ. किसी मुसल्मान की भैर प्वाडी की तो तमन्ना येडी होती है के अब कोई ऐसी सूरत ली बने के हमारा नाम आ जाओ, लोगों की ज़बानें हमारी सभावत के तराने गाओ, किसी पर ओहसान किया तो प्वाडिश होती है के येह हमारा प्वादिम बन कर रहे, हमारी ता'रीफों के पुल बांधे डालांके कुरआने पाक हमें ओहसान न जताने और उस का बदला सिर्फ़ अद्लाह तआला की जात से मांगने का हुक्म दे रहा है.

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : جيس نے मुज पर एक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह उस पर इस पर इस रहमते भेजता है. (مسلم)

જૈસા કે અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ પારહ 3, સૂ-રતુલ બ-કરહ કી આયત નમ્બર 262 મેં ઇશાદ ફરમાતા હૈ :

الَّذِينَ يَفْقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي  
سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يَتَّبِعُونَ مَا  
أَنْقَضُوا مَنًّا وَلَا أَذَىٰ لَهُمْ  
أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ

તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઈમાન : વોહ જો અપને માલ અલ્લાહ કી રાહ મેં ખર્ચ કરતે હૈં ફિર દિયે પીછે ન એહસાન રખેં ન તક્લીફ દેં ઉન કા નેગ (ઈન્આમ) ઉન કે રબ કે પાસ હૈ.

સદરુલ અફાઝિલ હઝરતે અલ્લામા મૌલાના સય્યિદ મુહમ્મદ નઈમુદીન મુરાદઆબાદી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَهْلٰى ઇસ આયતે મુબારકા કે તહ્ત ફરમાતે હૈં : “એહસાન રખના તો યેહ કે દેને કે બા’દ દૂસરોં કે સામને ઇઝહાર કરેં કે હમ ને તેરે સાથ ઐસે ઐસે સુલૂક કિયે ઔર ઉસ કો મુકદર (યા’ની ગમગીન) કરેં ઔર તક્લીફ દેના યેહ કે ઉસ કો આર દિલાએ (યા’ની શરમિન્દા કરેં) કે તૂ નાદાર થા, મુફલિસ થા, મજબૂર થા, નિકમ્મા થા હમ ને તેરી ખબર ગીરી કી યા ઔર તરહ દબાવ દેં યેહ મમ્નૂઅ ફરમાયા ગયા.” (ખઝાઈનુલ ઇરફાન) કાશ ! પૈકરે ઇખ્લાસો સફા, મૌલા મુશ્કિલ કુશા હઝરતે સય્યિદુના અલિય્યુલ મુર્તાઝા كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيمُ કે સદકે હમેં ભી ઇખ્લાસ કે સાથ સ-દકા વ ખૈરાત કરને કા જઝબા વ સઆદત નસીબ હો જાએ.

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

મેરા હર અમલ બસ તેરે વાસિતે હો  
કર ઇખ્લાસ ઐસા અતા યા ઇલાહી

(વસાઈલે બખ્શિશ, સ. 78)

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِيْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : श्री शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

## भौला अली की कुरआन इहमी

अखिरी व बातिनी उलूम पर खबरदार, साखिबे सीनअे पुर अन्वार, भौला अली हैदरे करारि كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ (भतौरे तह्दीसे ने'मत) इरमाते हैं : “अल्लाह ए़ुजल्ल की कसम ! मैं कुरआने करीम की हर आयत के बारे में जानता हूँ के वोह कब और कहां नाज़िल हुई. बेशक मेरे रब ए़ुजल्ल ने मुझे समझने वाला दिल् और सुवाल करने वाली ज़बान अता इरमाई है.”

(حلیة الاولیاء ج ۱ ص ۱۰۸)

दे तउपने इउकने की तौफ़ीक दे

दे दिवे मुर्तज़ा सोजे सिदीक दे

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

## सूरअे इतिहा की तइसीर

अमीरुल मुअमिनीन, भौला मुश्किद कुशा हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ने ईशाद इरमाया : “अगर मैं याहूँ तो “सू-रतुल इतिहा” की तइसीर से 70 गिंट लर हूँ.” (या'नी उस की तइसीर लिखते हुअे ईतने रजिस्टर (Registers) तय्यार हो जाअें के 70 गिंटों का बोज़ बन जाअे.) (قوٰت القلوب ج ۱ ص ۹۲)

## शहरे एल्मो हिक्मत का दरवाज़ा

दो इरामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : (1) “أَنَا مَدِينَةُ الْعِلْمِ وَعَلَيَّ بَابُهَا” (1) या'नी मैं एल्म का शहर हूँ और अली उस का दरवाज़ा हूँ.”

(2) “أَنَا دَارُ الْحِكْمَةِ وَعَلَيَّ بَابُهَا” (2) (مُسْتَدْرَك ج ۴ ص ۹۶ حديث ۶۷۹۳)

﴿فرمانے مستقر﴾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्वद पाक न पढा तउकीक  
 वोउ भद भपत हो गया. (उः)

डिकमत का घर हूं और अली उस का दरवाजा हूं.”

(ترمذی ج ۵ ص ۴۰۲ حدیث ۳۷۴۴)

## मौला अली की शान अ गजाने नबिये गैजदान

उजरते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, अलिय्युल मुर्तजा  
 كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ रिवायत करते हैं के रसूले अकरम, नबिये  
 मुह्तशम, ताजदारे उमम वः اللهُ وَسَلَّمَ ने (मुजे मुफातअ करते  
 हुअे) ईशादिरु फरमाया : “तुम में (उजरते) ईसा (عَلَيْهِ السَّلَام) की मिसाल  
 है, जिन से यहूद ने बुगज रफा उता के उन की वालिदअे माजिदा को  
 तोडमत लगाई और उन से ईसाईयों ने मडुबत की तो उन्हें उस  
 द-रजे में पड़ोया दिया जो उन का न था.” फिर शेरे फुदा उजरते  
 सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने ईशादिरु फरमाया :  
 “मेरे बारे में दो किरम के लोग उलाक होंगे मेरी मडुबत में ईफरात  
 करने (या)नी उद से बढने वाले मुजे उन सिफात से बढाअेंगे जो मुज  
 में नही हैं और बुगज रफने वालों का बुगज उन्हें ईस पर उतारेगा के  
 मुजे ओउतान लगाअेंगे.” (مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ ج ۱ ص ۳۳۶ حدیث ۱۳۷۶)

तफ्जिल का जेया न हो मौला की विला में

यूं छोड के गौडर को न तू बडरे पजफ़ ज़

(जौके ना'त)

या'नी उजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ की  
 मडुबत में ईतना न बढ के आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ को शैपैने करीमैन  
 رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ पर इजिलत देने लगे ! अैसी बूल कर के मोतियों जैसे साइ  
 शइइइ अकीदे को छोड कर ठीकरियों जैसा रदी अकीदा ईप्तिथार न कर.



करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुइटे पाक पढेना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (بخاری)

## “अली” के 3 हुइके की निरखत से मौला अली के मजीद 3 इजायल

अमीरुल मुअमिनीन, अली-इतुल मुस्लिमीन, एमामुल आदिलीन हजरते सय्यिदुना उमर फ़ाउके आ'उम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ एशरद करमाते हैं : फ़ातेहे भैबर, हैदरे करार, साहिबे जुल फ़िकार हजरते अलियुल मुर्तजा, शेरे भुटा وَجْهَهُ الْكَرِيمُ को 3 ऐसी इजीलतें छासिल हैं के अगर उन में से अक भी मुजे नसीब हो ज़ाती तो वोह मेरे नजदीक सुर्ष गिंटों से भी महबूब तर होती. सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने पूछा : वोह 3 इजायल कौन से हैं ? इरमाया : ﴿1﴾ अद्लाह के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने अपनी साहिब जादी हजरते फ़ाति-मतुज्जहरा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهَا को एन के निकाल में दिया ﴿2﴾ एन की रिहायश सरकारे अबद करार, शईअे रोजे शुमार, हो आलम के मालिको मुप्तार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ के साथ मस्जिदुन्न-अवियिशरीफ़ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهَا वَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ में थी और एन के लिये मस्जिद में वोह कुछ हलाल था जो एन्हीं का हिस्सा है. और ﴿3﴾ गज़वअे भैबर में एन को परयमे इस्लाम अता इरमाया गया.

(مُسْتَدْرَك ٤ ج ص ٩٤ حدیث ٤٦٨٩)

अहरे तस्वीमे अली मैदां में

सर जुके रइते हैं तलवारों के

(हदायके अफ़िश शरीफ़)

## सहाबा की इजीलत में तरतीब

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! हजरते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, अलियुल मुर्तजा, शेरे भुटा وَجْهَهُ الْكَرِيمُ की शान के भी

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَشَيْئًا: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदुई पाक न पढा तउकीक वोउ बढ भपत हो गया. (अबु) (1)

કયા કહને કે અમીરુલ મુઅમિનીન હઝરતે સય્યિદુના ઉમર ફારૂકે આ'ઝમ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ભી ઉન કી કિસ્મત પર રશક ફરમાતે હૈં, લેકિન ઈસ કા મતલબ યેહ નહીં કે હઝરતે સય્યિદુના અલિય્યુલ મુર્તઝા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફઝાઈલ મેં ઉન સે ભી બઢ ગએ, ફઝાઈલો મરાતિબ કે એ'તિબાર સે મસ્લકે હક અહલે સુન્નત વ જમાઅત કે નઝદીક જો તરતીબ હૈ ઈસ કા બયાન કરતે હુએ સદરુશશરીઅહ, બદરુત્તરીકહ હઝરતે અલ્લામા મૌલાના મુફતી મુહમ્મદ અમજદ અલી આ'ઝમી رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હૈં: તમામ સહાબએ કિરામ આ'લા વ અદના (ઔર ઈન મેં અદના કોઈ નહીં) સબ જન્નતી હૈં, બા'દે અમ્બિયા વ મુર-સલીન, તમામ મખ્લૂકાતે ઈલાહી ઈન્સો જિન્ન વ મલક (યા'ની ઈન્સાનોં, જિન્નોં ઔર ફિરિશ્તોં) સે અફઝલ સિદીકે અકબર હૈં, ફિર ઉમર ફારૂકે આ'ઝમ, ફિર ઉસ્માને ગન્ની, ફિર મૌલા અલી كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ કો (હઝરતે સય્યિદુના) સિદીક યા ફારૂક رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ સે અફઝલ બતાએ, ગુમરાહ બદ મઝહબ હૈ. ખુ-લફાએ અર-બઆ રાશિદીન કે બા'દ બકિય્યએ અ-શ-રએ મુબશ્શરહ વ હઝરાતે હ-સનૈન વ અસ્હાબે બદ્ર વ અસ્હાબે બૈઅતુર્રિઝવાન (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ) કે લિયે અફ-ઝલિય્યત હૈ ઔર યેહ સબ કત્ઈ જન્નતી હૈં. અફઝલ કે યેહ મા'ના હૈં કે અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કે યહાં ઝિયાદા ઈઝ્ઝત વ મન્ઝિલત વાલા હો, ઈસી કો કસ્રતે સવાબ સે ભી તા'બીર કરતે હૈં. (મુલાખ્ખસ અઝ બહારે શરીઅત, જિ. 1, સ. 241 તા 254)

મુસ્તફા કે સબ સહાબા જન્નતી હૈં લા જરમ

સબ સે રાઝી હક તઆલા સબ પે હૈ ઉસ કા કરમ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुभउ और दस मरतबा शाम दुइदे पाक पढा (उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्राअत मिलेगी. (रुवउ) (10/100))

## अ-श-रअे मुभशशरह के अस्माअे गिरामी

उउरते भौला अली मुश्किल कुशा शेरे फुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ  
अ-श-रअे मुभशशरह में से ली हैं, अ-श-रअे मुभशशरह उन दस सलअअे किराम الرَّضْوَانِ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانِ को कला जाता है जिन्हें अदलाउ एउर जल के उभीअ, उभीअे लभीअ, اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उभाने उके तरशुमान से फुसूसी तौर पर जन्तती डोने की बिशारत दी गई है. युनान्चे उउरते सय्यिदुना अउदुररुडमान बिन अौफ़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के ताजदारे मदीना, करारे कलभो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया :  
“अभू अक, उमर, उस्मान, अली, तलडा, जुबैर, अउदुररुडमान बिन अौफ़, सा'द बिन अभी वक़ास, सईद बिन जैद और अभू उबैदा बिन जरअड जन्तती हैं.” (رَضْوَانُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) (3768 حديث 416 ص 5 ج 10 مؤيد)

वोड दसों जिन को जन्त का मुजदा<sup>1</sup> मिला

उस मुभारक जमाअत पे लाभों सलाम

(उदाईके अफ़िश शरीफ़)

## फु-लइअे राशिदीन की इमीलत

इकीडे उम्मत उउरते सय्यिदुना अउदुदलाउ बिन मरउीद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है के सरकारे मदीना, राडते कलभो सीना, इैउ गन्जना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आलीशान है :  
“يَا أَيُّهَا الْمَدِينَةُ الْعِلْمِ وَأَبُوبَكْرٍ أَسَاسُهَا وَعُمَرُ حِطَّانُهَا وَعُثْمَانُ سَقْفُهَا وَعَلِيٌّ بَابُهَا”  
मैं ईलम का शहर हूँ, अभू अक उस की बुन्याद, उमर उस की दीवार, उस्मान उस की छत और अली उस का दरवाजा हैं.”

(مُسْنَدُ الْفَرْدُوسِ ج 1 ص 43 حديث 100)

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक हुवा और उस ने मुज पर दुइद शरीफ़ न पढा उस ने जका की. (عبدالرزاق)

तेरे यारों उमदम हें यक जान यक दिल

अबू बक़ इरुसमां अली है

(हदाईके बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

**महबबते अली का तकाज़ा**

अभीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा, शेरे भुदा क़र्रम अल्लु त़ैाली व ज़ुहू अल्लु क़र्रिम ने इरमाया : रसूले करीम, रउक़रुहदीम के आ'द सभ से बेइतर अबू बक़ व उमर हें इर इरमाया : “ يَا نَبِيَّ اللَّهِ لَا يَجْتَمِعُ حَيٌّ وَبُغْضُ أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ فِي قَلْبِ مُؤْمِنٍ ” मउबबत और (शैभैने जलीलैन) अबू बक़ व उमर उरुअ अल्लु त़ैाली एनुमा का बुग़ज़ किसी मोमिन के दिल में जम्न नहीं हो सकता.”

(अल्लुग़म अल्ला वुसुतु लिल्लुब्रानि ज ३ व ७९ हदीथ ३९२)

**कभी भी ध्यास न लगने का अनोखा राग**

जो लोग “दमादम मस्त कलन्दर अली दा पडला नम्बर” वाला न-उरिथ्या रभते हें, सप्त पता पर हें, उन की इइमाईश के लिये अक इमान अइरोज़ डिकायत पेश की जाती है, पढें और अद्लाह तआला तौफ़ीक बख़्शे तो कबूले हक़ करें युनान्ये उजरते सय्यिदुना शैभ अबू मुहम्मद अबुदुद्लाह मुह्तदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इरमाते हें : الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ : मैं ने उज की सआदत हासिल की. हरम शरीफ़ में अक शप्स के बारे में सुना के येह पानी नहीं पीता ! मुजे बडा तअज्जुब हुवा, मैं ने उस से मिल कर इस की वजह पूछी तो कइने लगा : मैं “हिल्ला” का आशिन्दा हूं, अक रात मैं ने प्वाब में कियामत

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीफ़ पड़ेगा में क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत कइवेगा. (क़ुरआन)

का डोशरुबा मन्जर देखा और शिदते प्यास से फुढ को बेताब पाया और किसी तरह डुजुरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के डौज मुबारक पर पडोय गया, वहां डजरते सय्यिदुना अबू बक़ सिदीक, डजरते सय्यिदुना उमर फ़ाइके आ'उम, डजरते सय्यिदुना उस्माने गनी और डजरते मौला अली शेरें फुढا عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ को पाया, येड डजरात लोगों को पानी पिवा रहे थे. में डजरते मौला अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ की भिदमत में डजिर हुवा कयूँके मुजे एन पर बडा नाज था, में उन से बहुत महब्बत करता था और तीनों फु-लफ़ा से एन्हें अइजल जानता था, मगर येड क्या ! आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ने मुज से येडुरअे मुबारक डी डैर लिया ! यूँके प्यास बहुत जियादा लगी थी में बारी बारी उन तीन फु-लफ़ा के पास ली गया, डर अेक ने मुज से अे'राज किया या'नी अपना मुबारक मुंड डैर लिया. एतने में मेरी नजर मदीने के ताजवर, सुस्ताने बडुरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर पडी, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बारगाडे अन्वर में डजिर डो कर में ने अरज की : या रसूलव्लाड ! मौला अली ने मुजे पानी नहीं पिवाया, बडे अपना मुंड डी डैर लिया. एशाद हुवा : वोड तुम्हें पानी डैसे पिवाअे ! तुम तो मेरे सडाबा से बुज्ज रभते डो ! येड सुन कर मुजे अपने अकीदे के गलत डोने का यकीन डो गया और में ने बसद नदामत डुजुर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दस्ते मुबारक पर सखी तौबा की, सरकारे आली वकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुजे अेक पिवाला एनायत इरमाया जो में ने पी लिया, डिर मेरी आंफ़ फुल गई. صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से पिवाला पिवा डे, मुजे बिडकुल प्यास नहीं लगती. एस फ्वाब के बा'द

﴿إبراهيم﴾  
 इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुरेदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है.

मैं ने अपने अहलो ईयाल को तौबा की तल्कीन की उन में से जिन्हों ने तौबा कर के मस्लके अहले सुन्नत व जमाअत कबूल किया मैं ने उन से मुरासिम (या'नी तअल्लुकात) काईम रभे, बाकियों से तोड डाले.

(مُلَخَّصٌ از مِصْبَاحِ الظَّلَامِ ص ۷۴)

जब दामने हजरत से हम डो गये वाबस्ता

दुन्या के सभी रिश्ते बेकार नजर आये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! ईस रिवायत से पता चलता है

के सख्ये मुसल्मान की पहचान येह है के वोह तमाम सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की अ-ज-मतो शान का दिल से मो'तरिफ़ होता है. अगर कोई शप्स भा'ज सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से महब्बत और भा'ज से जुज्ज रभता है तो वोह सप्त ग-लती पर है. अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हमें तमाम सहाबअे किराम व अहले बैते ईजाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से सख्यी महब्बत व अकीदत ईनायत इरमाअे. ईस पर ईस्तिकामत बप्शे और ईसी उल्फ़त व ईरादत की डालत में जेरे गुम्बदे भजरा जल्वअे महबूब में शहादत, जन्नतुल बकीअ में मदफ़न और जन्नतुल फिरदौस में अपने प्यारे डबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और यार यार का जवार (या'नी पडोस) ईनायत इरमाअे.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

सहाबा का गदा हूँ और अहले बैत का फ़ादिम

येह सब है आप डी की तो ईनायत या रसूलल्लाह !



﴿فرمانے مستحقاً حَسْبِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ﴾ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुड़के पाक पढा अल्लाह उस पर सो रडमते नाज़िल करमाता है. (طبرانی)

“शर्हुस्सुद्दूर” में नकल करते हैं, उजरते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब عَلَيْهِ اللهُ تَعَالَى فرमाते हैं : हम अभीरल मुअमिनीन उजरते अलिय्युल मुर्तजा शेरे फुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ के हमराह कब्रिस्तान से गुजरे, आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ने ईशाईद फरमाया : “السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُورِ وَرَحْمَةُ اللهِ” या’नी औ कब्र वालो ! तुम पर सलामती और अल्लाह उज्रुजल की रडमत हो.” और फरमाया : औ कब्र वालो ! तुम अपनी षबर बतारोगे या हम तुम्हें बतारें ? सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब عَلَيْهِ اللهُ تَعَالَى فرमाते हैं के हम ने कब्र से “وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ” की आवाज़ सुनी और कोई कडने वाला कड रडा था : या अभीरल मुअमिनीन ! आप ही षबर दीजिये के हमारे मरने के बा’द क्या हुवा ? उजरते मौला अली ने फरमाया : सुन लो ! तुम्हारे माल तकसीम हो गअ, तुम्हारी बीवियों ने दूसरे निकाल कर लिये, तुम्हारी औलाद यतीमों में शामिल हो गई, जिस मकान को तुम ने बहुत मजबूत बनाया था उस में तुम्हारे दुश्मन आबाद हो गअ. अब तुम अपना डाल सुनाओ. येह सुन कर अक कब्र से आवाज़ आने लगी : या अभीरल मुअमिनीन ! हमारे कइन इट कर तार तार हो गअ, हमारे बाल जड कर मुन्तशिर हो गअ, हमारी षालें टुकडे टुकडे हो गई हमारी आंभें बड कर रुष्सारों पर आ गई और हमारे नथनों से पीप बड रडी है और हम ने जो कुछ आगे ल्मेजा (या’नी जैसे अमल किये) उसी को पाया, जो कुछ पीछे छोडा उस में नुकसान हुवा.

(شَرْحُ الصُّدُورِ ص २०९ ابن عساکر ج २१ ص ३९०)

करमाने मुस्तफ़ा عَنِّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुइद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (تفسيره)

आभिरत की झिक करनी है ज़रूर जिन्दगी एक दिन गुज़रनी है ज़रूर  
कब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर  
एक दिन मरना है आभिर मौत है  
कर ले जो करना है आभिर मौत है

### धध्रत के म-दनी झूल

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! इस खिकायत से हज़रते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, अलिय्युल मुर्तजा, शेरे फुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ की रिइअत व अ-ज़मत और कुव्वते समाअत की एक जलक देअने में आई के आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने मुर्दों से उन के बरज़ाभी डालात पूछे, जवाभात सुने और उन्हें दुन्यवी डालात ईशाद इरमाअे, यकीनन येह आप की अज़ीमुशशान करामत है. नीज़ इस रिवायत में हमारे लिये धध्रत के म-दनी झूल भी हैं के जो शप्स दुन्या में रहते हुअे अपने अकाईदो आ'माल को न सुधारेगा, दुन्यवी ज्वाडिश़ात के ज़ाल में इंस कर आभिरत से गाज़िल रहेगा उस की कब्र उस के लिये सप्तियों का घर बनेगी और येह दुन्या की बे ज़ा झिकें और ज्वाडिशें उस के किसी काम न आअेंगी बल्के सिई दुन्या का माल ईकड्डा करने की झिक में लगा रहने वाला और झिर ईसी डाल में मर कर अंधेरी कब्र की सीढी उतर जाने वाला अपने दुन्यवी माल से कोई इअेदा न उठा पाअेगा, लवाडिकीन व वु-रसा उस के माल पर कब्ज़ा बल्के हुसूले माल के लिये जगडा कर के अपनी अपनी राह लेंगे और येह नादान ईन्सान जम्अे माल की धुन में मस्त रहते हुअे डलाल डराम की तमीज़ तुला बैठने और गुनाहों त्भरी जिन्दगी गुज़रने की वजह से अज़ाबे नार का डकदार करार पाअेगा.

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَفْزَا عَلَيْهِ وَاللهُ وَسَلَّمَ﴾ : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा ठिक हो और वोह मुज पर दुरुदे पाक न पड़े. (मं)

दौलते दुन्या के पीछे तू न जा आभिरत में माल का है काम क्या  
माले दुन्या हो जहां में है वबाल काम आयेगा न पेशे जुल जलाल  
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**मीठे मुस्तफ़ा की मौला मुश्किल कुशा पर अतायें हैं**

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो! उजरते सय्यिदुना मौला मुश्किल कुशा, अलिय्युल मुर्तजा, शेरे फुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ के जिस कदर फ़जाईलो कमालात आप ने मुला-उजा इरमाये वोह सभ रसूले फुदा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा, कासिमे ने'मते हर दो-सरा के सदके में हैं. हुज़ूर नबिय्ये करीम, रउिफ़ुरहीम की पुसूसी शफ़क्तों और अताओं के तुकैल अद्लाउ तआला ने उजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा, शेरे फुदा को वोह मकाम अता इरमाया के जिस पर आप के आने वाला हर शप्स रशक करता है. अद्लाउ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप को अपना मडबूब करार दे कर औसा मुमताज मकाम अता इरमाया के जिस तक कोई बडे से बडा वली, कुत्ब, गौस, अब्दाल त्मी नहीं पड़ोय सकता. (बहारे शरीअत, जिल्द अव्वल, स. 253 पर है : "कोई वली कितने ही बडे मर्तबे का हो किसी सहाबी के रुत्बे को नहीं पड़ोय सकता.")

**वाह ! क्या बात है फ़ातेहे ज़ैबर की**

उजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ पर

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरइदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अमल)

शरफ़त व अतामे रसूले रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अक्कासी करती हुई एक ईमान अफ़रोज ख़िकायत मुला-हज़ा इरमाईये. युनान्चे हज़रते सय्यिदुना सइल बिन सा'द رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने भौबर के दिन इरमाया : “कल येह जन्दा मैं जैसे शप्स को दूंगा जिस के हाथ अद्लाह तआला इत्ह देगा वोह अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) से महडभत करता है, नीज अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ और रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ) उस से महडभत करते हैं.” अगले रोज सुभ के वक्त हर आदमी येही उम्मीद रખता था के जन्दा उसी को दिया जायेगा. इरमाया : अली बिन अबी तालिब कहां हैं ? लोगों ने अर्ज की : या रसूलद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! उन की आंभें दुपती हैं. इरमाया : उन्हें बुलाओ, उन्हें लाया गया तो महडभूबे रब्बुल ईबाद, राहते हर कदमे नाशाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन कَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ की आंभों पर अपना लुआबे दहन (या'नी थूक शरीफ़) लगाया और हुआ इरमाई वोह जैसे अख़े हो गये गोया उन्हें दर्द था ही नहीं और उन्हें जन्दा दे दिया. अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ने अर्ज की : या रसूलद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! क्या मैं उन लोगों से उस वक्त तक लडूं जब तक वोह हमारी तरह मुसल्मान न हो जायें ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : नरमी इप्तिवार करो यहां तक के उन के मैदान में उतर जाओ फिर उन्हें ईस्लाम की दा'वत दो और अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ के

(ابن عمری) : فرماتے ہیں کہ : صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم : میں نے اپنے رب سے کہا کہ : میں نے تم سے دعا کی ہے کہ تم میرے لیے دعا کرو۔

જો હુકૂક ઉન પર લાઝિમ હેં વોહ ઉન્હે બતાઓ. ખુદા કી કસમ અગર અલ્લાહ ઁ وَجَلَّ عَزَّ وَجَلَّ તુમ્હારે ઝરીએ કિસી એક શખ્સ કો હિદાયત અતા ફરમાએ તો યેહ તુમ્હારે લિયે ઈસ સે અચ્છા હૈ કે તુમ્હારે પાસ સુખ ઊંટ હોં.

(بخاری ج ۲ ص ۳۱۲ حدیث ۳۰۰۹، مُسَلَّم ص ۱۳۱ حدیث ۲۴۰۶)

## કુવ્વતે હૈદરી કી એક ઝલક

ગઝવએ ખૈબર મેં એક યહૂદી ને હઝરતે હૈદરે કરારિ પર વાર કિયા, ઈસી દૌરાન આપ કَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ કી ઢાલ ગિર ગઈ, તો આપ કَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ આગે બઢ કર કલ્એ કે દરવાઝે તક પહોંચ ગએ ઔર અપને હાથોં સે કલ્એ કા ફાટક ઉખાડ દિયા ઔર કિવાડ કો ઢાલ બના લિયા, વોહ કિવાડ આપ કَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ કે હાથ મેં બરાબર રહા ઔર આપ કَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ લડતે રહે યહાં તક કે અલ્લાહ ઁ وَجَلَّ عَزَّ وَجَلَّ ને આપ કَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ કે હાથોં ખૈબર કો ફત્હ ફરમાયા. યેહ કિવાડ ઈતના વઝૂની થા કે જંગ કે બા'દ 40 આદમિયોં ને મિલ કર ઉઠાના યાહા તો વોહ કામ્યાબ ન હુએ. (دَلَائِلُ النَّبُوءَةِ لِلْبَيْهَقِيِّ ج ۴ ص ۲۱۲)

આ'લા હઝરત ફરમાતે હેં :

શેરે શમશીર ઝન શાહે ખૈબર શિકન

પર-તવે દસ્તે કુદરત પે લાખોં સલામ

(હદાઈકે બખ્શિશ શરીફ)

કિસી ઔર ને ભી ક્યા ખૂબ કહા હૈ :

અલી હૈદર ! તેરી શૌકત તેરી સૌલત કા ક્યા કહના

કે ખુસ્બા પઢ રહા હૈ આજ તક ખૈબર કા હર ઝરી

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : મુઝ પર કસરત સે દુરુદે પાક પઢો બેશક તુમ્હારા મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના (પાઠ) તુમ્હારે ગુનાહોં કે લિયે મઘિરત હે. (મુસ્નદ)

## અલી જેસા કોઈ બહાદુર નહીં

અમીરુલ મુઅમિનીન હઝરતે સચ્ચિદુના અલિય્યુલ મુર્તઝા, શેરે ખુદા **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** કા એક નુમાયાં તરીન વસ્ફ (યા'ની ખૂબી) શુજાઅત વ બહાદુરી હૈ ઔર ઈસ બહાદુરી કો ગૈબી તાઈદ ભી હાસિલ હૈ જેસા કે એક રિવાયત મેં હૈ : જબ અમીરુલ મુઅમિનીન, હઝરતે સચ્ચિદુના અલિય્યુલ મુર્તઝા, શેરે ખુદા **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** એક ગઝવે મેં કુફફારે બદ અત્વાર કો ગાજર મૂલી કી તરહ કાટ રહે થે તો ગૈબ સે યેહ આવાઝ આઈ : “**يَا'نِي أَلِيٍّ جَيْسًا كَوَيْدُ بَهَادُرٍ لَيْسَ**” ઔર ઝુલ ફિકાર જેસી કોઈ તલવાર નહીં.”

(جزء الحسن بن عرفة العبدي ص 62 حديث 38 ماخوذاً)

હેં અલી મુશ્કિલ કુશા સાયા કુનાં સર પર મેરે

લા ફતા ઈલ્લા અલી, લા સૈ-ફ ઈલ્લા ઝુલ ફિકાર

(વસાઈલે બખ્શિશ, સ. 400)

## લુઆબ વ દુઆબે મુસ્તફા કી બ-ર-કતે

હઝરતે સચ્ચિદુના અલિય્યુલ મુર્તઝા, શેરે ખુદા **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** ફરમાતે હૈં કે સુલ્તાને ઝમાનો ઝમન, મહબૂબે રબ્બે ઝુલ મિનન **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** કા લુઆબે દહન લગને કે બા'દ મેરી દોનોં આંખેં કભી ન દુખીં. (مسند امام احمد بن حنبل ج 1 ص 169 حديث 579) હઝરતે મૌલા અલી **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** ગર્મિયોં મેં ગર્મ કપડે ઔર સર્દિયોં મેં ઠન્ડે કપડે પહનતે થે, કિસી ને વજહ પૂછી તો ફરમાયા કે જબ જનાબે રિસાલત મઆબ **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ને મેરી આંખોં મેં અપને મુંહ મુબારક સે લુઆબ લગાયા તો સાથ મેં યેહ



﴿इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ : जिस ने किताब में मुज पर दुइदे पाक लिखा तो जव तक मेरा नाम उस में रहेगा इरिशते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अब्रार)

मीठे मीठे इस्लामी त्माईयो ! देखा आप ने के हैदरे करार व साहिबे जुल फ़िकार अमीरुल मुअमिनीन, मौला मुश्किल कुशा, उअरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा, शरे फुदा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ के इफ़्लास की ब-र-कत से यहूदी को इस्लाम जैसी अजीमुशान ने'मत नसीब हो गई, ईसी तरह हमारे दीगर अस्वाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام भी हम वक्त अपने नेक आ'माल को ज़ायते रहते के येह अमल कहीं दूसरों को दिखाने के लिये तो नहीं ! अगर किसी नेक अमल में नफ़सो शैतान की मुदा-जलत या रियाकारी का थोडा सा भी शाअेबा महसूस इरमाते तो इौरन उस से बयने बलके बसा अवकात तो उस अ-मले सालेह को दोबारा करने की तरकीब बनाते युनान्ये

### 30 साल की नमाज़ें दोहराएँ

अेक बुजुर्ग رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ 30 साल तक मस्जिद की पहली सफ़ में (बा जमाअत) नमाज़ अदा इरमाते रहे, अेक बार उन को पहली सफ़ में जगह न मिली और दूसरी सफ़ में षडे हो गअे तो शर्म महसूस होने लगी के लोग क्या कहेंगे के देओ ! आज ईस आदमी की पहली सफ़ छूट गई है. येह जयाल आते ही आप رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ संभल गअे और अपने नफ़स का मुहा-सबा करने लगे के "अै नफ़स ! मैं 30 साल तक जे नमाज़ें पहली सफ़ में अदा करता रहा क्या वोह लोगों को दिखाने के लिये थीं जे आज तुजे शर्म आ रही है !" युनान्ये उन्हों ने पिछले 30 साल की नमाज़ें दोहराई और कमावे सिद्को इफ़्लास की नादिर मिसाल काईम इरमाई. (احياء العلوم ج ٢ ص ٣٠٢) اامين بجاه النبي الامين صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

✽ इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रदे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस  
✽ रउमते भेजता है. (स्) ✽

दे दुस्ने अप्लाक की दौलत कर दे अता एप्लास की ने'मत

मुझ को पजाना दे तक्वा का

या अल्लाह ! मेरी जौली त्तर दे

(वसाएले बज्शिश, स. 109)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

**तुम मुझ से हो**

नबियों के सुल्तान, रउमते आ-लमिय्यान, सरदारे दौ जहान,  
मउभूबे रउमान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उजरते मौला अली शेरें  
भुटा क़र्रम क़र्रम क़र्रम के बारे में इरमाने इज़ीलत निशान है :  
“أَنْتَ يَا نَبِيَّ مُحَمَّدٍ وَمِنِّي وَأَنَا مِنْكَ”

(तिर्मिज़ी ज ० व ३९९ हदिथ ३७३६)

ऐ तद्वते शउ ! आ, तुजे मौला की कसम ! आ

ऐ जुल्मते दिल् ! ज़ा, तुजे उस रुष का उलफ़ ज़ा

(जौके ना'त)

या'नी ऐ मौला अली صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रुषे जैबा की रोशनी !  
तुजे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कसम देता हूँ के मुझ पर अपनी तजल्ली उल !  
और ऐ मेरे दिल् की तारीकी ! तुजे मौला मुश्किल कुशा  
मिज़्ज़ा के येदुरअे अन्वर की कसम ! मुझ से दूर हो ज़ा.

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

**तुम मेरे भाई हो**

उजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से  
रिवायत है के रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (मदीनअे

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : श्री शम्भु मुञ्ज पर दुइडे पाक पठना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (टिप्पणी)

मुनव्वरह (शुआबुल इमन में मुहाजिरीन और अन्सार) सहाबअे किराम रِضْوَانِ عَلَيْهِمُ के दरमियान भाईयारा काँम इरमाया, तो हजरते सय्यिहुना अलिय्युल मुर्तजा, शरे भुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ईस हावत में हाजिर हुअे के आंभों से आंसू बह रहे थे, अर्ज की : “या रसूलद्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ) ! आप ने सहाबअे किराम के दरमियान भाईयारा काँम इरमाया, लेकिन मुजे किसी का भाई न बनाया ?” रसूले अकरम (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ) ने ईशाद इरमाया : “أَنْتَ أَخِي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ”

(त्रुमडी ज ० व ५०१ हदथ ३७६)

## शहँ हदीस

मुइस्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुइती अहमद यार भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ ईस हदीसे पाक के तह्त इरमाते हैं : या'नी तुम रिशते में भी मेरे ययाजाद भाई हो और अब ईस अकदे मुआभात (या'नी भाईयारे के कौलो करार) में भी तुम को अपना भाई बनाया और हुन्या व आभिरत में अपना भाई बनाया. (عَزَّ وَجَلَّ) ! मगर भयाल रहे के ईस के बा वुजूद कभी हजरते सय्यिहुना अली (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ) ने हुजूर को भाई कह कर न पुकारा (जब कभी पुकारा) तो “یا रसूलद्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ) !” कह कर (ही पुकारा), फिर किसी अरे गैरे को भाई कहने का हक कैसे हो सकता है ! (भिरआतुल मनाज्जह, जि. 8, स. 418)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : جيس کے پاس میرا تیک ڈુوا اور اُس نے مٲج پر دٲرہہ پاک ن پدا تہککک  
 وٲوہ بٲہ بٲت ٲو گٲا. (ٲ:ٲٲ)

## શેરે ખુદા કા ઇશકે મુસ્તફા

હઝરતે સચ્ચિદુના અલિય્યુલ મુર્તાઝા کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم سے  
 કિસી ને સુવાલ કિયા કે આપ કો રસૂલુલ્લાહ صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم سے  
 કિતની મહબ્બત હૈ ? ફરમાયા : ખુદા عَزَّ وَجَلَّ કી કસમ ! હુઝૂરે અકરમ  
 صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم હમારે નઝદીક અપને માલ વ આલ, વાલિદૈન  
 ઔર સખ્ત પ્યાસ કે વક્ત ઠન્ડે પાની સે ભી બઢ કર મહબૂબ (યા'ની  
 પ્યારે) હૈ. (السَّفَاء ج ٲ ص ٲٲ)

## શેરે ખુદા કી ખુદાદાદ ખૂબિયાં

હઝરતે સચ્ચિદુના અબી સાલેહ رَحْمَةُ اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ سے મરવી હૈ, એક  
 મર્તબા હઝરતે સચ્ચિદુના અમીરે મુઆવિયા رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ને હઝરતે  
 સચ્ચિદુના ઝિરાર رَحْمَةُ اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ سے ફરમાયા : “મેરે સામને હઝરતે  
 સચ્ચિદુના અલી کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم કે ઔસાફ (યા'ની ખૂબિયાં) બયાન  
 કીજિયે.” હઝરતે સચ્ચિદુના ઝિરાર رَحْمَةُ اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ ને અર્ઝ કી : અમીરુલ  
 મુઅમિનીન હઝરતે સચ્ચિદુના અલિય્યુલ મુર્તાઝા શેરે ખુદા  
 کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم કે ઇલ્મો ઇરફાન કા અન્દાઝા નહીં લગાયા જા સકતા,  
 આપ کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم કે અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ કે મુઆ-મલે ઔર અસ કે દીન  
 કી હિમાયત મેં મઝબૂત ઇરાદે રખતે, ફૈસલા કુન બાત કરતે ઔર ઇન્તિહાઈ  
 અદલો ઇન્સાફ સે કામ લેતે, આપ کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم કી ઝાત મમ્બએ  
 ઇલ્મો હિક્મત થી, જબ કલામ (યા'ની ગુફ્ત-ગૂ) કરતે તો દ-હને મુબારક  
 સે હિક્મતો દાનાઈ કે ફૂલ ઝડતે, દુન્યા ઔર ઇસ કી રંગીનિયોં સે વહ્શત  
 ખાતે, રાત કે અંધેરે મેં (ઇબાદતે ઇલાહી عَزَّ وَجَلَّ સે) મસરૂર (ખુશ)  
 હોતે, અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ કી કસમ ! આપ کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم બહુત  
 ઝિયાદા રોને વાલે, દૂર અન્દેશ ઔર ગમઝદા થે, અપને નફસ

करमाने मुस्तक़ा حَسْبِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुइदे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रउमते बेजता है. (स्म)

का मुछा-सबा करते, फुर-दरा और मोटा लिबास पसन्द करमाते और मोटी रोटी खाते. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कसम ! रो'बो दबदबा ऐसा था के हम में से हर अक आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ से कलाम (या'नी बात) करते हुअे डरता था, छावांके जब हम छाजिर होते तो मिलने में आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ फुढ पडल करते और जब हम सुवाल करते तो जवाब ँशदि करमाते, और हमारी दा'वत कबूल करमाते. जब मुस्कराते तो दन्दाने मुबारक ऐसे मा'लूम होते जैसे मोतियों की लडी, आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَरِيمِ परछेज गारों का अेदतिराम करते, मिस्कीनों से मडुषुबत करमाते, किसी ताकत वर या साहिबे सरवत (या'नी सरमाया दार) को उस की बातिल (या'नी बेकार) आरजू में उम्मीद न दिलाते, कोई ल्मी कमजोर शप्स आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ की अदालत से मायूस न होता बडेसे उम्मीद होती के मुजे यछां ँन्साइ उउर मिलेगा. अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कसम ! मैं ने देखा के जब रात आती तो आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ अपनी दाढी मुबारक पकड कर आरो कितार रोते और जप्मी शप्स की तरड तडपते. मैं ने आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ को येड करमाते हुअे सुना : “अै दुन्या ! आया तूने मुज से मुंड मोड लिया है या अल्मी तक मेरी मुश्ताक (या'नी मेरा शौक रअती) है ? अै धोकेबाज दुन्या ! जा, तू किसी और को धोका दे, मैं तुजे तीन तलाकें दे युका हूं अब ँस में हरगिज रुजूअ नहीं, तेरी उअ्र बहुत कम और तेरी आसांशें और ने'मतें ँन्तिछांई हकीर हें, और तेरे नुकसानात बहुत जियादा हें, छाअे ! सईरे (आभिरत) निछायत तवील है, जादे राड बहुत कलील (या'नी थोडा सा) और रास्ता ँन्तिछांई अतरनाक और पेयदार है.” येड सुन कर हजरते सय्यिदुना अभीरे मुआविया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَضْفًا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾: श्री शम्स मुज पर दुर्रदे पाक पढना भूल गया वोड जन्त का रास्ता भूल गया. (गुरान)

की आंभों से आंसू बहने लगे उता के रीश (या'नी दाढी) मुबारक आंसूओं से तर हो गई और वहां मौजूद लोग भी ज़ारो कितारोने लगे, फिर आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “**اَللّٰهُ اَحَبُّ اِلَيْكُمْ**”  
अबुल हसन (हजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्ताजा, शरे भुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ पर रहूम फ़रमाओ, अल्लाह उरुज की कसम !  
वोड ऐसे ही थे.” (عيون الحكايات ص २०)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

**मौला अली मोमिनों के “वली” हैं**

हजरते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है : मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान, सरवरे जीशान, महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने तक़रुब निशान है :  
“**يَا نَبِيَّ اَلِيٌّ مَوْلَايَ وَهُوَ لِيْ كُلِّ مُؤْمِنٍ**”  
से हूँ और वोड हर मोमिन के वली हूँ.” (ترمذى ج १ ص ६९८ حديث ३४३२)

वासिता नबियों के सरवर का वासिता सिदीक और उमर का

वासिता उस्मानो डैदर का

या अल्लाह ! मेरी ओली भर दे

(वसाएले बफ़िश, स. 107)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

**यहां “वली” से क्या मुराद है ?**

मुफ़रिसरे शहीर उकीमुल उम्मत हजरते मुफ़ती अहमद यार आन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : यहां वली ब मा'ना भलीफ़ा नहीं बटके ब मा'ना दोस्त य ब मा'ना मददगार है, जैसे रब फ़रमाता है :

﴿فرمانے مستحقاً صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم﴾: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदें पाक न पढा तउकीक  
 वोउ भद भपत हो गया. (अ. 1)

اَتَّبِعُوا لِيُكْرِمَ اللَّهُ وَرَسُولَهُ

तर-ज-मअे क-जुल ईमान: तुम्हारे

दोस्त नहईं मगर अल्लाह और उस

وَالَّذِينَ آمَنُوا (प. 6, المائدة: 50)

का रसूल और ईमान वाले.

वहां भी वली भ मा'ना मददगार है. "ईस इरमान से दौ मस्अले मा'लूम हुअे, अेक येउ के मुसीबत में "या अली मदद" कलना जाईउ है, कयूँके उजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्ताजा कूरुमोमिन के मददगार हैं ता कियामत, दूसरे येउ के आप कूरुमोमिन के "मौला अली" कलना जाईउ है, के आप कूरुमोमिन के वली और मौला हैं."

(मिरआतुल मनाज्जिद, जि. 8, स. 417)

दुश्मन का ओर भठ यला है या अली मदद !

अभ जुल इंकारे हैदरी इर भे नियाम हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**या अली मदद कलने के दलाघल जानने के लिये.....**

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! "या अली मदद" कलने के मस्अले की वजाहत जानने और बहुत सारे वसाविस दूर करने के लिये द्वा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-भतुल मदीना से "गैरुल्लाह से मदद मांगने का सुभूत" नामी VCD उदिय्यतन हासिल कर के उसे मुला-हजा इरमाईये. नीज ईसी रिसाले के सईहा 56 ता 95 पर भी कुरआनो उदीस की रोशनी में येउ मस्अला वाजेउ किये गया है.



﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَضْفًا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ : जिस के पास मेरा ठिक हुआ और उस ने मुझ पर दुइद शरीक न पढा उस ने जका की. (عبدالرزاق)

दोनो मेरे कूल हें.” (ترمذی حدیث ३७१५) धन ही दोनो जन्ती कूलो का सदका !

अहमद रजा को बरोजे क्रियामत कूल की तरह हंसता बसता रचना.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

### धरानये हैदर की इमीलत

उजराते ह-सनैने करीमैन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ओक बार भीमार हो गये तो अभीरुल मुअमिनीन उजरते मौलाये कायेनात, अलियुल मुर्ताजा, शरे भुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ व उजरते सय्यि-दतुना बीबी फातिमा और फादिमा उजरते सय्यि-दतुना किन्ना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने धन शहजादो रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की सिद्धत याभी के लिये तीन रोजों की मन्नत मानी. अल्लाह तआला ने दोनो शहजादो रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को शिफा अता फरमाई, युनान्ये तीन<sup>3</sup> रोजे रभ लिये गये. उजरते मौला अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ तीन साअ जव लाये. ओक ओक साअ (या'नी 4 किलो में से 160 ग्राम कम) तीनों दिन पकाया. जब ईफतार का वक्त आया और तीनों रोजादारों के सामने रोटियां रभी गई तो ओक दिन भिस्कीन, ओक दिन यतीम और ओक दिन क़ेदी दरवाजे पर लाजिर हो गये और रोटियों का सुवाल किया तो तीनों दिन सब रोटियां उन साईलो को दे दीं और सिर्फ पानी से ईफतार कर के अगला रोजा रभ लिया.” (अजाइनुल ईरफान, स. 1073 अ तसदुफ़) अल्लाह وَعَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके उमारी बे हिसाब भगिरत हो.

أَمِينٍ بِجَاةِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

भूके रह के भुद ओरो को भिला देते थे

कैसे साबिर थे मुहम्मद के धराने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

करामाते मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीफ पढेगा मैं डियामत के दिन उस की शकाअत करेगा. (क्र. १०१)

दुरआने करीम में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अभीरुल मुअमिनीन, भौलाअे काअेनात, हजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा, शेरे फुदा कَرَّمَ اللہُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ के घराने के इस इमान अइरोज इसार को इस तरह बयान इरमाया है :

وَيُطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِ مِسْكِينًا  
وَيَتِيْمًا وَّ اَسِيْرًا ۝ اِنَّا نَطْعَمُكُمْ  
لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَاءً  
وَلَا شُكُوْرًا ۝ (پ ۲۹، الم: ۸-۹)

तर-ज-मअे कन्जुल इमान : और  
पाना पिलाते हैं उस की महब्बत  
पर मिरकीन और यतीम और  
असीर (या'नी कैदी) को, उन से कलते  
हैं हम तुम्हें भास अल्लाह के लिये  
पाना देते हैं, तुम से कोई बदला  
या शुक्र गुजारी नहीं मांगते.

### तुम्हारी दाढी पून से सुर्प कर देगा

हजरते सय्यिदुना अम्मार बिन यासिर رَضِيَ اللہُ تَعَالَى عَنْہُمْ इरमाते हैं : मैं और हजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा, शेरे फुदा कَرَّمَ اللہُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ “गज्वअे जिल उशैरह”<sup>1</sup> में थे के नबिय्ये आबिरुज्जमान, रसूले गैबदान, सुल्ताने दो जहान, रहमते आ-लमिय्यान, सरवरे जीशान صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इशदि इरमाया : क्या मैं तुम को उन दो शप्सों के बारे में ખबर न हूं जो लोगों में से सब से जियादा बढ अप्त हैं? हम ने अर्ज की : “कयूं नहीं, या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !” पस रसूले जी वकार, गैबों पर खबरदार बि इज्ने परवर्द गार صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

1 : इस गज्वे की सिन 2 डिजरी में मइज तय्यारी हुई थी, कुइर से जिहाद की नौबत नहीं आई थी. (المواهب اللدنیة ج ۱ ص ۱۷۴)

﴿۱﴾ فرماتے ہیں: صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم: من فرغ من ذکرہ پاک کی کسرت کرو بیشک یہ تو بخیرے لیتے تھارت ہے۔ (ابو یوسف)

(گہب کی ખબર દેતે હુએ) ઈશાદિ ફરમાયા : “﴿1﴾..... કૌમે સમૂદ કા વોહ શખ્સ (યા’ની કદાર બિન સાલિક) જિસ ને અલ્લાહ (عَزَّ وَجَلَّ) કે નબી (હઝરતે) સાલેહ (عَلَيْهِ السَّلَام) કી મુકદ્દસ ઊંટની કી મુબારક ટાંગે કાટી થીં ઓર ﴿2﴾..... એ અલી (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم) ! વોહ શખ્સ જો તુમ્હારે સર પર તલવાર માર કર તુમ્હારી દાઢી ખૂન સે સુખ કર દેગા.”

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ ج ٦ ص ٣٦٥ حَدِيثُ ١٨٣٤٩ مُتَّخِصًا)

જિન કા કૌસર હૈ જન્મત હૈ અલ્લાહ કી જિન કે ખાદિમ પે રાફત હૈ અલ્લાહ કી દોસ્ત પર જિન કે રહમત હૈ અલ્લાહ કી જિન કે દુશ્મન પે લા’નત હૈ અલ્લાહ કી

ઉન સબ અહલે મહબ્બત પે લાખોં સલામ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## તીન ખારિજિયોં કી તીન સહાબા કે બારે મેં સાજિશ

દા’વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 192 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ “સવાનેહે કરબલા” સફહા 76 તા 77 પર સદરુલ અફાઝિલ હઝરતે અલ્લામા મૌલાના સય્યિદ મુહમ્મદ નઈમુદ્દીન મુરાદઆબાદી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي નકલ ફરમાતે હૈ : ખવારિજ મેં સે એક ના મુરાદ અબ્દુરહમાન બિન મુલ્જમ મુરાદી ને બરક બિન અબ્દુલ્લાહ તમીમી ખારિજી ઓર અમ્ર બિન બુકૈર તમીમી ખારિજી કો મકકતુલ મુકર્રમા મેં જમ્મ કર કે મૌલાએ કાએનાત હઝરતે સય્યિદુના અલિય્યુલ મુર્તઝા, હઝરતે સય્યિદુના અમીરે મુઆવિયા બિન અબી સુફ્યાન ઓર હઝરતે સય્યિદુના અમ્ર બિન આસ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَدْرِكًا عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالسَّلَامُ : تُمْ جَدَا لَمْ يَلِ خُو مُجَ پَر دُرُودِ پَدُو كَ تُمْبَارَا دُرُودِ مُجَ تَكْ  
پَدُو یَتَا هُ. (طَرَاقِ)﴾

के कत्ल का मुआ-हदा किया और अमीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ के कत्ल के लिये एँने मुल्जम आमादा हुवा और अक तारीफ मुअय्यन (या'नी तै) कर ली गई.

### एँने मुल्जम की जद जप्ती का सजज एशके मजजी हुवा

“मुस्तदरक” में है के एँने मुल्जम अक पारिजिय्या औरत के एशके मजजी में गिरिफ्तार हो गया था, उस जालिमा पारिजिय्या औरत ने शादी के लिये महर में 3 हजार दिरहम और ثَلَاثُ مِائَاتٍ हजरते मौला अली كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ के कत्ल का मुता-लजा रपा था. (121 حديث 474) एँने मुल्जम कूड़ा पड़ोया और वहां के पवारिज से मिला और उन्हें दरपदा अपने नापाक एरादे की एतिलाअ दी तो वोह भी उस के साथ मुत्तफिक हो गये.

### शहादत की रात

एस माहे 2-मजानुल मुबारक (40 हि.) में आप كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ का येह दस्तूर था के अक शब हजरते सय्यिदुना एंमामे आली मकाम एंमामे हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ, अक शब हजरते सय्यिदुना एंमामे हसन मुजतबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और अक शब हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन ज'फर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास एंफ्तार इरमाते और तीन लुकमों से जियादा तनावुल न इरमाते और (कम जाने की वजह बयान करते हुअे) एंशादि इरमाते : मुजे येह अख्शा मा'लूम होता है के “अल्लाह तआला से मिलते वक्त मेरा पेट पाली हो.” शहादत की रात तो येह डालत रही के बार बार मकान से बाहर तशरीफ लाते और आस्मान की तरफ देप कर इरमाते : أَعْرُوجُ ! मुजे कोई पजर जूटी नहीं दी

﴿قرمانे मुस्तक﴾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतभा दुइडे पाक पढा अल्लाह उँस पर सो रउमत नोजिल करमाता है. (पुर्तान)

गई, येह वोडी रात है जिस का वा'दा किया गया है. (गोया आप क़रम अल्लाह त़ाली व ज़हे अक़रिम को अपनी शहादत का पहले ही से एल्म था.)

(सवानेहे करबला, स. 76, 77 मुलअबसन)

## कतिलाना हम्ला

शभे जुमुआ 17 (या 19) र-मजानुल मुबारक 40 सि.हि.

को उ-सनैने करीमैन ग़ेहमा अल्लाह त़ाली के वालिदे अजुर्गा-वार, हैदरे कररि, साहिबे जुल फ़िकार अमीरुल मुअमिनीन हजरते सय्यिदुना अलियुल मुर्तजा क़रम अल्लाह त़ाली व ज़हे अक़रिम के वक्त बेदार हुअे, मुअज़्ज़िन ने आ कर आवाज दी और क़हा : **الصَّلَاةُ الصَّلَاةُ !** युनान्चे आप क़रम अल्लाह त़ाली व ज़हे अक़रिम नमाज पढने के लिये घर से यले, रास्ते में लोगों को नमाज के लिये सदाअं देते और जगाते हुअे मस्जिद की तरफ़ तशरीफ़ ले जा रहे थे के अयानक एँने मुल्जम पारिज्ज बह अप्त ने आप क़रम अल्लाह त़ाली व ज़हे अक़रिम पर तलवार का अेक अैसा ज़ालिमाना वार किया के जिस की शिदत से आप क़रम अल्लाह त़ाली व ज़हे अक़रिम की पेशानी कन्पटी तक कट गई और तलवार टिमाग पर जा कर ठहरी. एँतने में यारों तरफ़ से लोग दौड कर आअे और उस पारिज्ज बह अप्त को पकड लिया. एँस अलम-नाक वाकिअे के 2 दिन आ'द आप क़रम अल्लाह त़ाली व ज़हे अक़रिम जाभे शहादत नोश फ़रमा गअे. (तारिख़ الخلفاء ص 139) अल्लाह उँस पर रउमत डो और उन के सदके उमारी बे हिसाब मग़्दिरत डो.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

✽ इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा ठिक छो और वोड मुज पर दुरुद शरीक न पढे तो वोड लोगो मे से कजूस तरीन शप्स है. (ज़िज़र)

## धब्ने मुल्जम की लाश के टुकडे नज़रे आतश कर दिये गये

हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन, सय्यिदुना इमामे हुसैन और सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन ज़ा'इर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ ने आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ को गुस्ल दिया, हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन मुजतबा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने नमाजे जनाजा पढाई और दारुल इमारत कूड़ा में रात के वक्त दफ़न किया. लोगो ने धब्ने मुल्जम बढ किरदार व बढ अत्वार के जिस्म के टुकडे कर के अेक टोकरे में रफ़ कर आग लगा दी और वोड जल कर फ़ाकिस्तर हो गया. (ايضاً)

## जा'दे मौत कातिले अली की सज़ा की लरज़ा ज़ैज़ हिकायत

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ क़िताब "इंज़ाने सुन्नत" जिल्द हुवुम के 505 सफ़हात पर मुश्तमिल बाब "गीबत की तबाह कारियां" सफ़हा 199 पर है : इस्मह अब्बादानी कहते हैं : मैं किसी जंगल में घूम रहा था के मैं ने अेक गिर्जा देखा, गिर्जा में अेक राखिब की फ़ानकाह थी उस के अन्दर मौजूद राखिब से मैं ने कहा के तुम ने इस (वीरान) मकाम पर ज़े सभ से अज्जबो गरीब थीज देखी हो वोड मुजे बताओ ! तो उस ने बताया : मैं ने अेक रोज़ यहां शुतर मुर्ग जैसा अेक देव हेकल सईद परन्दा देखा, उस ने उस पथर पर बैठ कर कै की, उस में से अेक इन्सानि सर निकल पडा, वोड बराबर कै करता रहा और इन्सानि आ'जा निकलते रहे और बिजली की सी सुरअत (या'नी कुरती) के साथ अेक दूसरे से जुडते रहे यहां तक के वोड मुकम्मल आदमी बन गया ! उस आदमी ने जूँ डी उठने की कोशिश की उस देव हेकल परन्दे ने उस के ठोंग मारी और उस को टुकडे टुकडे कर

﴿فَرَّامَانَهُ مُسْتَكْفًا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ : उस शप्स की नाक भाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिंक हो और वोह मुज पर दुरुदे पाक न पड़े. (१६)

दिया, फिर निगल गया. कई रोज तक मैं येह भौंफनाक मन्जर देभता रहा, मेरा यकीन भुदा ﴿عَزَّ وَجَلَّ﴾ की कुदरत पर बढ गया के वाकेई अद्लाह एरन्टे की तरफ मु-तवज्जेह हुवा और उस से दरयाइत किया के एै परन्टे ! मैं तुजे उस जात की कसम दे कर कहता हूं जिस ने तुज को पैदा किया ! अब की बार जब वोह ईन्सान मुकम्मल हो जाये तो उस को बाकी रहने देना ताके मैं उस से उस का अमल मा'लूम कर सकूं ! तो उस परन्टे ने इसीह अ-रबी में कहा : “मेरे रब ﴿عَزَّ وَجَلَّ﴾ के लिये ही बादशाहत और बका है हर चीज फानी है और वोही बाकी है मैं उस का अक इरिश्ता हूं और ईस शप्स पर मुसल्लत किया गया हूं ताके ईस के गुनाह की सजा देता रहूं.” जब कै में वोह ईन्सान निकला तो मैं ने उस से पूछा : एै अपने नइस पर जुल्म करने वाले ईन्सान ! तू कौन है और तेरा किस्सा क्या है ? उस ने जवाब दिया : “मैं (हजरते) अली (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ) का कातिल अब्दुर्रहमान ईब्ने मुल्जम हूं, जब मैं मर युका तो अद्लाह ﴿عَزَّ وَجَلَّ﴾ के सामने मेरी इह हाजिर हुई, उस ने मेरा नामअे आ'माल मुज को दिया जिस में मेरी पैदाईश से ले कर हजरते अली (كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ) को शहीद करने तक की हर नेकी और बदी लिखी हुई थी. फिर अद्लाह ﴿عَزَّ وَजَلَّ﴾ ने ईस इरिश्ते को हुकम दिया के वोह कियामत तक मुजे अजाब दे.” येह कह कर वोह युप हो गया और देव डेकल परन्टे ने उस पर ठोंगों मारीं और उस को निगल गया और यला गया.

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقِيمًا﴾ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोझे जुमुआ दो सो बार दुर्रहे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआक छोडो. (त्रिभाल)

## शहवत की पैरवी का दर्दनाक अन्जाम

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! देखा आप ने मौला अली शेरे फुदा **كُرِّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** था कैसा दर्दनाक अन्जाम हुवा ! वोह बढ नसीब क्यूं ईतना बडा गुनाह करने के लिये आमादा हुवा जैसा के पहले बयान हो चुका है के वोह अक पारिजिया औरत पर आशिक हो गया था उस पारिजिया ने शादी का महर येह मुकरर किया था के तुम्हें हजरते अलिय्युल मुर्तजा (**كُرِّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ**) को शहीद करना पडेगा. **अइसोस !** ईशके मजाजी में ईब्ने मुल्जम अन्चा हो गया और उस ने हजरते मौला मुश्किल कुशा, अलिय्युल मुर्तजा, शेरे फुदा **كُرِّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** जैसी अजीम हस्ती को शहीद कर दिया, ईस ना-बकार को वोह औरत तो पाक मिलनी थी हाथों हाथ येह सजा मिली के लोगों ने देपते ही देपते उसे पकड लिया, बिल आभिर उस के बदन के टुकडे टुकडे कर के टोकरे में डाल कर आग लगा दी गई और वोह जल कर पाकिस्तर हो गया ! और मरने के आ'द ता कियामत जारी रहने वाले उस के लरजा भौज अजाब का अल्मी आप ने तजकिरा सुना. वोह बढ अप्त न ईधर का रहा न उधर का. हजरते सय्यिदुना अबू दरदा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने बिदकुल सय इरमाया है के “शहवत की घडी भर पैरवी तवील गम का भाईस होती है.”

(الرُّهْدُ الْكَبِيرُ لِلْبَيْهَقِيِّ ص ١٠٧ حَدِيث ٣٤٤)

## सहाबये किराम की शान

सहाबिये रसूले हाशिमी हजरते सय्यिदुना अबू सईद फुदरी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है, नाबिय्ये करीम, रउिफुर्हीम **عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ** का इरमाने अजीम है : “मेरे सहाबा को बुरा न कछो

(अबु सरी) : इरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुज पर हुइइ शरीफ पढे अल्लाह उजल तुम पर रहमत भेजिगा.

क्यूंके अगर तुम में से कोई उहुद (पहाउ) तर सोना भैरात करे तब त्नी  
 उन के न अक मुद को पडोये न आधे को.” (بخاری ۲۷۲۲ حدیث ۲۲۲۲)  
 जितने तारे हैं उस यर्भे जी जाड के जिस कदर माडपारे हैं उस माड के  
 जा नशीं हैं जो मट्टे हक आगाड के और जितने हैं शहजादे उस शाड के

उन सब अडले मकानत पे लाभों सलाम

मुइस्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुइती अहमद यार  
 पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنُ इस हदीसे मुभा-रका के तहुत इरमाते हैं : “4  
 मुद का अक साअ डोता है और अक साअ साढे यार सैर का, तो  
 मुद अक सैर आध पाव हुवा, या'नी मेरा सडाभी करीबन सवा सैर  
 जव भैरात करे और उन के धलावा कोई मुसल्मान ज्वाह गौस व  
 कुत्ब डो या आम मुसल्मान पहाउ तर सोना भैरात करे तो उस का  
 सोना कुर्भे धलाही عَزَّ وَجَلَّ और कबूलिय्यत में सडाभी के सवा सैर जव  
 को नहीं पडोय सकता, येह ही डाल रोजा नमाज और सारी धबादात  
 का है, जभ मस्जिदुन्न-बवी عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नमाज दूसरी  
 जगह की नमाजों से 50 हजार गुना है तो जिन्हों ने हुजर  
 का कुर्भे और दीदार पाया उन का क्या पूछना  
 और उन की धबादात का क्या कडना ! इस हदीस से मा'लूम हुवा के  
 हजराते सडाभा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का जिक्र हमेशा भैर से ही करना याहिये,  
 किसी सडाभी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को हलके लइज से याद न करो, येह  
 हजरात वोह हैं जिन्हें रभ عَزَّ وَجَلَّ ने अपने मडभूभ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم  
 की सोडभत के लिये युना, मेहरबान बाप अपने भेटे को भुरों की सोडभत  
 में नही रहने देता तो मेहरबान रभ عَزَّ وَجَلَّ अपने नभी  
 عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को भुरों की सोडभत में रहना केसे पसन्द इरमाता !”

इरमाने मुस्तफा. عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ : मुज पर कसरत से दुइदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइदे पाक पढना तुम्हारे युनाडों के लिये मङ्कित है. (बायुम्)

रसूलुल्लाह तय्यिब उन के सब साथी भी ताडिर हें  
युनीदा बडरे पाकां उजरते फाड़के आ'जम हें

(मिरआतुल मनाज्जिह, जि. 8, स. 335)

## म-दनी माडोल से वाबस्ता रहिये

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! तमाम सहाबअे किराम और अडले बैते ईजामِ رَضْوَانِ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की उकीकी उल्फत व अकीदत की सआदत اَلْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ सिर्फ अडले सुन्नत के हिस्से में आई. दीन पर ईस्तिकामत पाने, सहाबा व अडले बैतِ الرَّضْوَانِ عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की महब्बत का जाम पीने पिलाने और औलियाअे किराम का फुसूसी ईजान पाने के लिये “दा'वते ईस्लामी” के म-दनी माडोल से हर दम वाबस्ता रहिये के ईस म-दनी माडोल से वाबस्तगी दोनों जहानों में काम्याबी का जरीआ है. दा'वते ईस्लामी के पुर बडार म-दनी माडोल में बिगडे हुअे अकाईदो आ'माल की नुडूसतों और गन्दगियों से छुटकारा मिलता और उक पर काईम रहने का पुफ्ता जेडून बनता है. आप की तरगीब व तडरीस के लिये अेक ईमान अफरोज म-दनी बडार पेश की जाती है युनान्चे

## बद अकी-दगी से तोबा

लतीफआबाद हैदरआबाद (बाबुल ईस्लाम सिन्ध) के अेक ईस्लामी भाई ने कुछ ईस तरह बताया : बा'ज लोगों की सोडभत में बैठने की बिना पर मेरा जेडून खराब हो गया और मैं तीन साल तक नियाज शरीफ और मीलाद शरीफ वगैरा पर घर में अे'तिराज



﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَضْفًا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾: जिस ने किताब में मुज पर दुर्रदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़कार करते रहेंगे. (अब्रान)

रब्बो लम यजल عَزَّوَجَلَّ का इजल हो गया. मैं ने म-दनी काङ्किले के तमाम मुसाफ़िरों को जम्अ कर के अे'लान किया के कल तक मैं बद अकीदा था आप सब गवाह हो जाईये के आज से तौबा करता हूं और दा'वते ईस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता रहने की निय्यत करता हूं. ईस्लामी भाईयो ने इस पर इरहत व मसरत का ईजहार किया. दूसरे दिन 30 रुपै की नुकती (अक बेसन की मिठाई जो मोती के दानों की तरह बनी होती है) मंगवा कर मैं ने सरकारे बगदाद हुजुरे गौसे आ'जम शैफ अब्दुल कादिर जलानी قُدَسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي की नियाज दिलवाई और अपने हाथों से तकसीम की. मैं 35 साल से सांस के भरज में मुप्तला था, कोई रात बिगौर तकलीफ़ के न गुजरती थी, नीज मेरी सीधी दाढ में तकलीफ़ थी जिस के बाईस सहीह तरह आ भी नहीं सकता था. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ म-दनी काङ्किले की ब-र-कत से दौराने सफ़र मुजे सांस की कोई तकलीफ़ न हुई और الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं सीधी दाढ से बिगौर किसी तकलीफ़ के आना भी आ रहा हूं. मेरा दिल गवाही देता है के अकाईदे अहले सुन्नत हक हें और मेरा हुस्ने जन है के दा'वते ईस्लामी का म-दनी माहोल अह्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में मकबूल है.

छाओ गर शै-तनत, तो करें देर मत काङ्किले में यलें, काङ्किले में यलो सोहबते बद में पड, कर अकीदा बिगड गर गया हो यलें, काङ्किले में यलो

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

करमाने मुस्तफ़ा حَسْبِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रुदे पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस  
रहमते भेजता है. (مسلم)

## गौरुल्लाह से मदद मांगने के आरे में सुवाल जवाब

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! आ'ज लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा दूसरे से मदद मांगने के तअल्लुक से वस्वसों का शिकार रहते हैं उन को समझाने की कोशिश का सवाब कमाने की अख्ठी अख्ठी निय्यतों से यन्द सुवाल जवाब पेश किये जाते हैं, अगर एक बार पढने से तसल्ली न हो तो तीन बार पढ लीजिये, إِنَّ شِرَارَ لَيْسَ إِلَّا اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ ईन्शिराहे सद्र होग़ा या'नी सीना भुल जाओगा, आत दिल् में उतर जाओगी, वस्वसे दूर होंगे और ईत्मीनाने कल्ब नसीब होगा.

### हज़रते अली को मुश्किल कुशा कहना कैसा है ?

सुवाल (1) : हज़रते अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم को मुश्किल कुशा कहना कैसा है ? क्या सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही मुश्किल कुशा नहीं ?

जवाब : मुश्किल कुशा के मा'ना हैं : “मुश्किल हल करने वाला, मुश्किल में मदद करने वाला.” बेशक हकीकी मा'नों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही मुश्किल कुशा है, मगर उस की अता से अम्बिया, सलाबा और औलिया बल्के आम बन्दे भी मुश्किल कुशा और मददगार हो सकते हैं इस की आम इडूम मिसाल येह है के पाकिस्तान में जा बजा येह बोर्ड लगे हुअे हैं “मददगार पोलीस इन नम्बर 15” हर एक येह जानता है के पोलीस थोरों डाकूओं वगैरा से बचाने, दुश्मनों के पतरों और दीगर मुश्किल मौकओं पर मुश्किल कुशाई या'नी मदद करने की सलाहिय्यत रअती है. مَكَدُّتُكُلِّ مُكْرَرِّمًا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا से

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढेना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (طرائق)

छिजरत कर के जो सलाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ मदीनतुल मुनव्वरुड पडोंये, वहां उन की नुसरत (या'नी मदद) करने वाले सलाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ “अन्सार” कहलाअे और अन्सार के मा'ना मददगार हैं. ईस के ईलावा भी बे शुमार मिसालें दी जा सकती हैं तो जब पोलीस मुश्किल कुशा, समाज कारकुन छाजत रवा, योकीदार मददगार और काजी इरियाद रस हो सकता है, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अता से छजरते मौला अली शेरे फुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ क्यूं मुश्किल कुशा नहीं हो सकते !

कह दे कोई घेरा है बलाओं ने इसन को

अै शेरे फुदा बडरे मदद तैग बकइ जा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“मौला अली” कहना कैसा ?

सुवाल (2) : मौलाना ! मुआइ कीजिये, अभी आप ने “मौला अली” कहा, छावांके “मौला” तो सिई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की जात है.

जवाब : बेशक छकीकी मा'नों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही “मौला” है मगर मजाजन (या'नी गैर छकीकी) मा'नों में दूसरे को “मौला” कहने में कोई मुजा-यका नहीं. आज कल उ-लमाअे किराम बटके उभूमन हर दाढी वाले को मौलाना कह कर मुभातब किया जाता है, कभी आप ने “मौलाना” के मा'ना पर भी गौर इरमाया ? अगर नहीं तो सुन लीजिये, मौलाना के मा'ना हैं : “हमारा मौला” देखिये ! सुवाल में भी तो “मौलाना” कहा गया है ! जब आम शप्स को भी मौलाना या'नी “हमारा मौला” कहने में कोई वस्वसा नहीं

﴿إِذْ قَالَ لَهُمُ ابْنُ مَرْيَمَ لِمَ أَتَاكُمْ فِي هَذِهِ قُلُوا لَهُمْ هَذَا بَشَرًا فَرِحُوا بِهِ فَرَحَ الْجَاهِلِيَّةِ أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ سَاءَ لَكُمْ لِقَاءَ رَبِّهِمْ﴾  
 ﴿إِنْ﴾  
 जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरद्वेष पाक न पढा तउकीक  
 वोह भद भपत हो गया. (अः)

आता तो आभिर “मौला अली” कहने में क्युं वस्वसा आ रहा है !  
 اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط पढ कर शैतान को भगा दीजिये  
 और तसल्ली रखिये के “मौला अली” कहने में कोई हुरज नहीं  
 बल्के हजरते सय्यिदुना अली كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيْمِ के “मौला” होने  
 की तो हदीसे पाक में सराहत मौजूद है युनान्ये सुनिये और “हुब्बे  
 अली” में सर धुनिये :

### जिस का मैं मौला हूं उस के अली भी मौला हूँ

सरकारे वाला तभार, हम बे कसों के मददगार, शईअे रोजे  
 शुमार, हो आलम के मालिको मुप्तार, हबीबे परवर दगार  
 يا'नी जिस كُنْتُ مَوْلَاهُ فَعَلَيْ مَوْلَاهُ: है ईशाद है صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
 का मैं मौला हूं अली भी उस के मौला हूँ. (ترمذی ج ۵ ص ۳۹۸ حدیث ۳۷۳۳)

### “मौला अली” के मा'ना

मुझसिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुझती अहमद यार  
 जान اَحْسَنُ عَلَيَّ وَرَحْمَةُ الْحَسَنِ इस हदीसे पाक के अल्फाज “जिस का मैं मौला हूं  
 अली भी उस के मौला हूँ” के तहत इरमाते हूँ : मौला के बहुत (से)  
 मा'ना हूँ : दोस्त, मददगार, आज्ञाद शुदा गुलाम, (गुलाम को) आज्ञाद  
 करने वाला मौला. इस (हदीसे पाक में मौला) के मा'ना खलीफा या  
 बादशाह नहीं यहां (मौला) ब मा'ना दोस्त (और) महबूब है या ब  
 मा'ना मददगार और वाकेई हजरते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा  
 مَوْلَاهُ مُحَمَّدٌ كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيْمِ के दोस्त भी हूँ, मददगार भी, इस  
 लिये आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيْمِ को “मौला अली” कहते हूँ. (मिरआतुल  
 मनाज्जह, जि. 8, स. 425) कुरआने करीम में अदलाह तआला,

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुर्रदे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रउमतें बेजता है. (सु.)

जिब्रीले अमीन और नेक मुअमिनीन को “मौला” कहा गया है. युनाय्ते पारह 28 सू-रतुतड्रीम आयत नम्बर 4 में रब عَزَّوَجَلَّ इरमाता है :

فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ  
وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : तो  
बेशक अल्लाह उन का मददगार है  
और जिब्रील और नेक ईमान वाले.

कहा जिस ने या गौस अगिस्नी तो हम में  
हर आई मुसीबत टली गौसे आ'जम

(सामाने बफ़िशश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

### मुहस्सिरीन के नगदीक “मौला” के मा'ना

सुवाल (3) : आप ने मौला के मा'ना “मददगार” लिभे हैं क्या  
दीगर मुहस्सिरीन का भी ईस से ईत्तिफ़ाक है ?

जवाब : क्यूं नही. मु-तअददद तफ़सीर के उवाले दिये जा सकते हैं  
नमू-नतन 6 कुतुबे तफ़सीर के नाम मुला-हजा हों जिन में ईस  
आयते मुबा-रका में वारिद लफ़ज “मौला” के मा'ना वली और  
नासिर (या'नी मददगार) लिभे हैं : (1) तफ़सीरे त-बरी, जिल्द  
12 सफ़हा 154 (2) तफ़सीरे कुरतुबी, जिल्द 18 सफ़हा 143 (3)  
तफ़सीरे कबीर, जिल्द 10 सफ़हा 570 (4) तफ़सीरे बग्वी, जिल्द  
4 सफ़हा 337 (5) तफ़सीरे फ़ाजिन, जि. 4 सफ़हा 286 (6)  
तफ़सीरे नस्फी, सफ़हा 1257. उन यार किताबों के नाम भी  
हाजिर हैं जिन में आयते मुबा-रका के लफ़ज “मौला” के मा'ना  
“नासिर” (या'नी मददगार) किये गअे हैं : (1) तफ़सीरे जलालैन,

करमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ज़ो शफ्स मुज़ पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

सईहा 465 (2) तईसीरे इडुल मआनी, जिल्ह 28 सईहा 481 (3) तईसीरे बैजावी, जिल्ह 5 सईहा 356 (4) तईसीरे अभी सुडिद, जिल्ह 5 सईहा 738.

या फुदा बहरे जनाभे मुस्तफा ईमदाद कुन

या रसूलव्लाह अल बहरे फुदा ईमदाद कुन

(हदाईके बफिशश शरीफ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

“إِيَّاكَ تَسْتَعِينُ” की बेहतरीन तशरीह

सुवाल (4) : सू-रतुल इतिहा में है : “إِيَّاكَ تَسْتَعِينُ” या’नी हम तुजी से मदद मांगते हैं.” लिहाजा किसी और से मदद मांगना शिर्क हुवा ?

जवाब : मजकूरा आयते करीमा में मदद से मुराद हकीकी मदद है

या’नी अद्लाह عَزَّوَجَلَّ को हकीकी कारसाज समज कर अर्ज किया जा

रहा है : अै रब्बे करीम ! “हम तुजी से मदद मांगते हैं” रहा बन्दों

से मदद मांगना तो वोह मइज वासितअे इैजे ईलाही समज कर है.

जैसा के पारह 12 सूरअे यूसुफ आयत नम्बर 40 में है :

إِنَّ الْكُفْرَ الْاَلَّ اللهُ (तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : हुकम नहीं मगर अद्लाह

का) या पारह 3 सू-रतुल ब-करह आयत नम्बर 255 में इरमाया :

لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ (तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : उसी का है

जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ जमीन में) फिर हम हकाम को

हकम (या’नी इैसला करने वाला) भी मानते हैं और अपनी चीजों

पर मिद्विख्यत का दा’वा भी करते हैं या’नी आयत से मुराद है

हकीकी हकम (या’नी इैसला करने वाला) और हकीकी मिद्विख्यत,

मगर बन्दों के लिये ब अताअे ईलाही. (जअल हक, स. 215)

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقِيمًا﴾ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَنِيٌّ وَهُوَ اللَّهُ وَسْتَعِينُكَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दृढ़दे पाक न पढा तलकीक वोलु भद भप्त हो गया. (अन०)

कई मकामात पर कुरआने करीम ने गैरुद्लाह को मददगार करार दिया है, इस जिम्न में 4 आयाते मुभा-रका मुला-उजा हों :

(1) **وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ** तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : और

**وَالصَّلَاةِ** सभ्र और नमाज से मदद याहो.

(प० १, अ० १०५) क्या सभ्र भुदा है ? जिस से ईस्तिआनत (या'नी मदद मांगने)

का हुकम हुआ है. क्या नमाज भुदा है ? जिस से ईस्तिआनत (या'नी त-लबे ईमदाद) को ईशाद किया है. दूसरी आयत में इरमाता है :

(2) **وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ** तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : और

**وَالتَّقْوَى** नेकी और परहेज गारी पर अेक दूसरे की मदद करो.

अगर गैरे भुदा से मदद लेनी मुत्लकन मुडाल (या'नी हर सूरत में ना मुम्किन) है तो इस (आयते मुभा-रका में ईशाद कदा) हुकमे ईलाही का हासिल क्या ?

(3) **إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ** तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : तुम्हारे

**وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يَتَّقُونَ** दोस्त नहीं मगर अद्लाह और उस का रसूल और ईमान वाले के नमाज का ईम करते हैं और जकात देते हैं

**وَالصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ** और अद्लाह के हुजूर जुके हुअे हैं.

(प० १, अ० १०५)

(4) **وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ** तर-ज-मअे कन्जुल ईमान :

**بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ** मुसल्मान मर्द और मुसल्मान औरतें अेक दूसरे के रझीक हैं.

(प० १, अ० १०५)

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقْبَلِ عَمَلِهِ وَغَيْرِ مَا عَلَيْهِ﴾ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुभल और दस भरतबा शाम दुइदे पाक पढा  
 (उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्रातत भिदेगी.. (यारुअरु))

ईस आयते मुभा-रका की तइसीर येह की गई है : “और  
 बाहम दीनी मडब्बत व मुवालात रफते हैं और अक दूसरे के मुईनो  
 मददगार हैं.” (फजाईनुल ईरफान, पारह : 10, अतौबल : 71) सहीह  
 ईस्लामी अकीदे के मुताबिक अगर कोई शप्स येह अकीदा रफते हुअे  
 अम्बियाअे किराम और औलियाअे किराम से मदद तलब करे के वोह  
 अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की ईजाजत के बिगैर बजाते फुद नइअ व नुकसान के  
 मालिक हैं तो येह यकीनन शिर्क है जब के ईस के भर अक्स अगर कोई  
 शप्स हकीकी मददगार और नइअ व नुकसान का हकीकी मालिक  
 अद्लाह तआला को मान कर किसी को मजाजन (या’नी गैर हकीकी तौर  
 पर) और मइज्जताअे ईलाही से मददगार समजते हुअे मदद याहे  
 तो हरगिज शिर्क नहीं और येही हमारा अकीदा है.

बहर हल सू-रतुल फातिहा की आयते मुभा-रका  
 (“يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اسْتَعِينْ”) या’नी हम तुजी से मदद याहें) हक है, मगर शैतान  
 का बुरा हो के येह लोगों को वस्वसे डाल कर गलत इहमियों का शिकार  
 कर देता है. गौर इरमाईये ! आयते मुभा-रका में जिन्दा मुर्दा वगैरा  
 की तप्सीस किये बिगैर मुत्वकन या’नी हर हल में अद्लाह तआला के  
 सिवा दूसरे से मदद मांगने की नई या’नी ईन्कार क्रिया गया है.  
 आयते मुभा-रका के जाहिरि व लइजी मा’ना के अे’तिबार से जो के  
 “अहले वस्वसा” ने समजा है कोई दूसरा तो ठीक येह फुद भी “शिर्क”  
 से नहीं बय सकते म-सलन वज्जुनदार गठरी जमीन पर रफी है उठा  
 नहीं पा रहे, किसी को आवाज दे कर कहा : “बराअे मेहरबानी !  
 उठाने में जरा मेरी मदद कर दीजिये ताके सर पर रफ लूं.” ईस  
 वस्वसे के मुताबिक येह शिर्क हुवा या नहीं ? जरूर हुवा. ईस  
 तरह की हजारों मिसालें दी जा सकती हैं, अस यारों तरफ गैरे  
 फुदा की ईमदाहों के नज्जारे हैं. म-सलन ईन्फाक ई सफीविद्लाह

﴿إِذْ رَمَانَهُ مُسْتَقْبِلَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ : जिस के पास मेरा ठिक हुआ और उस ने मुझ पर दुइद शरीक न पढा उस ने जका की. (عبدالرزاق)

या'नी राडे भुदा में अर्थ करने का ब कसरत जगहों पर अस्ल मुदआ ही "बाहमी ठमदाद" है ! ठस में स-दका व भैरात, फ़ित्रा व जकात, मसाजिद व मदारिस के लिये यन्दा व अतिथ्यात, कुरबानी की ખालों के मुता-लबात, समाज्ठ ठदारात, वगैरा वगैरा सब का मफ़ाद ठमदाद, ठमदाद और ठमदाद ही तो है ! मजीद आगे बढिये तो मजलूमों की मदद के लिये अदालत है तो मरीजों की ठमदाद के लिये तिबाबत, अन्दरूने मुल्क के बाशिन्दों की मदद के लिये पोलीस की निजामत है तो बैरूनी दुश्मनों से डिफ़ाजत के लिये फ़ौज ताकत, औलाद की परवरिश में मदद के लिये मां बाप की ज़रूरत है तो ठन की ता'लीमो तरबियत के लिये ता'लीम ग़ाह की छाजत. अल गरज जिन्दगी में कदम कदम पर गैरुल्लाह की मदद व डिमायत की ज़रूरत है बल्के मरने के बा'द भी तकफ़ीन व तदफ़ीन बिगैर गैरुल्लाह की मदद के मुश्किन नहीं, फिर ता क्रियामत ठसाले सवाब के जरीअे मदद की छाजत है और आभिरत में भी सब से अहम मदद की ज़रूरत है या'नी प्यारे आका मुस्तफ़ा की शफ़ाअत. येह सब गैरुल्लाह की मददें ही हैं :

आज ले ठन की पनाह आज मदद मांग ठन से

फ़िर न मानेंगे क्रियामत में अगर मान गया

(हदाथके बफ़िश शरीफ़)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**गैरे भुदा से मदद मांगने की अहादीसे मुबा-रका में तरगीब**

सुवाल (5) : गैरुल्लाह से मदद मांगने की तरगीब पर कुछ अहादीसे मुबा-रका भी बयान कर दीजिये.

जवाब : गैरे भुदा से मदद मांगने की तरगीब से मु-तअद्लिक दो इरामीने

मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुला-हज़ा ठों : ﴿1﴾ मेरे रहम दिल उम्मतियों

﴿करमाने मुस्तक﴾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीक पढेगा में क्रियामत के दिन उस की शक्रामत कइगे। (अब्राम)।

से ङाजते मांगो रिज्क पाओगे. (अजामु الصّغير للسّيوطی ص १०६ حدیث ११०६)

﴿2﴾ “बलाई और अपनी ङाजते अखे येडरे वालों से मांगो.”

(अलमूजुम अलक़िबर ललप्टरानी ज ११ व ११०६ حدیث ११११)

अल्लाह एरमाता है : इज्जल मेरे रइम दिल बन्दों से मांगो उन के दामन में आराम से रहोगे के मैं ने अपनी रइमत उन में रपी है. (मसन्दु الشّهاب ج १ व ६०६ حدیث १०००)

## नाबीना को आंभें मिल गइ

इज्जते सख्खिदुना उस्मान बिन हुनेइ रज़ी अल्ले त्वाली एने से रिवायत है के अेक नाबीना सहाबी रज़ी अल्ले त्वाली एने ने बारगाडे रिसालत में ङाजिर ङो कर अर्ज की : अल्लाह एरुज्जल से दुआ कीजिये के मुजे आइय्यत दे. एशरद इरमाया : “अगर तू याडे तो दुआ कइ और याडे सअ कर और येड तेरे लिये बेडतर है.” उन्छों ने अर्ज की : इज्जूर ! दुआ इरमा दीजिये. उन्छें इकम इरमाया के वुजू करो और अख्ख वुजू करो और दो रकअत नमाज पढ कर येड दुआ पढो :

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ اَنْ تَوْجِّهَ اِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَّبِيِّ الرَّحْمَةِ ط يَا مُحَمَّدُ اِنِّىْ تَوَجَّهْتُ بِكَ اِلَى رَبِّىْ فِى حَاجَتِىْ هَذِهِ لِتَقْضِىَ لِىْ ط اَللّٰهُمَّ فَشَقِّعْهُ فِى ط

अै अल्लाह (एरुज्जल) में तुज से सुवाल करता हूं और तवस्सुल (या'नी वसीला पेश) करता हूं और तेरी तरइ मु-तवज्जेड ङोता हूं तेरे नबी मुहुम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) के जरीअे से जो नबिये रइमत हैं.

1 : एस दुआ का वजीइा करते वक्त “या मुहुम्मद” कइने के अज्जअे “या रसूलल्लाह” कइना है. एस के दलाइल इतावा र-जविय्या जिद 30 रिसाला “तजल्लियुल यकीन” सइइा 156 त्ता 157 पर मुला-इज्ज कीजिये.

(ابن ماجه). इरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و اله وسلم: मुज पर दुरदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है.

या रसूलल्लाह (صلى الله تعالى عليه و اله وسلم) ! में हुजूर के जरीअे से अपने रब (عز و جل) की तरफ़ अपनी छाजत के बारे में मु-तवज्जलेह छोता हूं ताके मेरी छाजत पूरी हो. या अल्लाह ! एन की शफ़ाअत मेरे हक में कबूल इरमा. हजरते सय्यिहुना उस्मान बिन हुनैफ़ رضي الله تعالى عنه इरमाते हैं : “भुदा (عز و جل) की कसम ! हम उकने ली न पाअे थे, भातें ही कर रहे थे के वोह हमारे पास आअे गोया कभी नाबीना ही नहीं थे !” (अहारे शरीअत, जि. 1, स. 685,

ابن ماجه ج 2 ص 106 حديث 1380, ترمذی ج 5 ص 336 حديث 3089, المعجم الكبير ج 9 ص 30 حديث 8311)

“या रसूलल्लाह” वाली दुआ की अ-र-कत से काम बन गया

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! इस हदीसे मुभा-रका से दूर से

“या रसूलल्लाह” कहने की इजाजत साबित होती है क्यूंके उन सहाबी ने अलग से किसी कोने में जा कर युपके युपके ही “या रसूलल्लाह” पुकारा है ! और हक येह है के येह इजाजत उस “नाबीना सहाबी” के लिये मफ्सूस न थी बल्के बा’दे वफ़ाते आहिरी ता कियामे कियामत इस की अ-र-कतें मौजूद हैं. हजरते सय्यिहुना उस्मान बिन हुनैफ़ رضي الله تعالى عنه ने अमीरुल मुअमिनीन, जामिउल कुरआन हजरते सय्यिहुना उस्मान बिन अरफ़ान رضي الله تعالى عنه के जमानअे षिलाइत में येही दुआ अेक साहिबे छाजत को अताई. “त-अरानी” में है : अेक शप्स अपनी किसी ज़रत को ले कर हजरते सय्यिहुना उस्मान बिन हुनैफ़ رضي الله تعالى عنه की षिदमते अकदस में छाजिर हुवा आप رضي الله تعالى عنه ने इरमाया : वुजू करो इर मख़िद में दो रकअत नमाज अदा करो इर येह दुआ मांगो : (यहां वोही दुआ अताई जो अली हदीसे पाक में सफ़हा 64 पर गुजरी) और (इरमाया : इस दुआ के

﴿فَرْمَانَهُ مُوسَىٰ عَلَيْهِ السَّلَامُ﴾ : تُوْمَ جَلَدًا لَمْ يَلِدْهُ مُوسَىٰ عَلَيْهِ السَّلَامُ وَهُوَ فِي بَطْنِهَا فَذَرَفَتْهُ بِمَاءٍ وَأَرْضًا لَمْ يَلِدْهَا (طبرانی) .

આખિરી લફ્ઝ) حَاجَتِي કી જગહ અપની હાજત કા નામ લેના. વોહ આદમી ચલા ગયા ઔર જૈસા ઉસ કો કહા ગયા થા ઉસ ને વૈસા હી ક્રિયા ઔર ઉસ કી હાજત પૂરી હો ગઈ. (الْمُعْجَمُ الْكَبِيرُ ج ٩ ص ٣٠ حديث ٨٣١١ مُلَخَّصًا).

### બા'દે વફાત આકા ને મદદ ફરમાઈ

હઝરતે સય્યિદુના ઈમામ બુખારી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي કે મોહતરમ ઉસ્તાદ હઝરતે ઈમામ ઈબ્ને અબી શૈબા رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ફરમાતે હૈં : અમીરુલ મુઅમિનીન હઝરતે સય્યિદુના ઉમર ફારૂકે આ'ઝમ રહ્યા હોય તેને કહો કે તારા સાહેબ હુઝૂરે અન્વર, મહબૂબે રબ્બે અકબર صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કે રૌઝમે અત્હર પર હાઝિર હુએ ઔર અર્ઝ કી : “یا رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! અપની ઉમ્મત કે લિયે બારિશ તલબ ફરમાઈયે, કે લોગ હલાક હો રહે હૈં.” જનાબે રિસાલત મઆબ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઉન સાહેબ કે ખ્વાબ મેં તશરીફ લા કર ઈશાદિ ફરમાયા : ઉમર કે પાસ જા કર મેરા સલામ કહો ઔર ઉન કો ખબર દો કે બારિશ હોગી. (مُصَنَّفُ ابْنِ أَبِي شَيْبَةَ ج ٧ ص ٤٨٢ حديث ٣٠ مختصراً) વોહ સાહેબ સહાબિયે રસૂલ હઝરતે સય્યિદુના બિલાલ બિન હારિસ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ છે. હઝરતે સય્યિદુના ઈમામ ઈબ્ને હજર અસ્કલાની قُدْسٌ سِرُّهُ الْوَرْدَانِ ને ફરમાયા : યેહ રિવાયત ઈમામ ઈબ્ને અબી શૈબા رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ને સહીહ અસ્નાદ કે સાથ બયાન કી હૈ. (فَتْحُ الْبَارِي ج ٣ ص ٤٣٠ تَحْتِ الْحَدِيثِ ١٠١٠)

ગમો આલામ કા મારા હૂં આકા બે સહારા હૂં  
મેરી આસાન હો હર એક મુશ્કિલ યા રસૂલલ્લાહ !

(વસાઈલે બખ્શિશ, સ. 134)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढा अल्लाह (उस पर सो रउमते नाज़िल करमाता है. (पु. 1)

## ऐ अल्लाह के बन्दो ! मेरी मदद करो

**सुवाल (6) :** अगर कोई शप्स जंगल बियाबान के अन्दर मुश्किल में  
इंस जाओ तो नजात के लिये क्या करे ?

**जवाब :** अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की बारगाह में गिरगिडा कर हुआ मांगे के  
उकीकत में वोही उजत रवा और मुश्किल कुशा है नीज हुस्ने  
अे'तिकाद के साथ सरवरे काअेनात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सख्यी  
ता'लीमात पर अमल करे. जैसे मौकअ के लिये क्या ता'लीमात हैं  
वोह त्मी मुला-उठा हों युनान्ये नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक  
صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आइय्यत निशान है : जब तुम में  
से किसी की कोई यीज गुम हो जाओ या राह तूल जाओ और मदद याहे  
और ऐसी जगह हो जहां कोई हमदम (या'नी यार व मददगार) नहीं  
तो उसे याहिये यूं पुकारे : "يَا عِبَادَ اللَّهِ اغِيثُونِي، يَا عِبَادَ اللَّهِ اغِيثُونِي" औ  
अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के बन्दो ! मेरी मदद करो, ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के बन्दो !  
मेरी मदद करो." के अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के कुछ बन्दे हैं जिन्हें येह नहीं  
देखता.

(المعجم الكبير ج 17 ص 117 حديث 290)

करोडों उ-नइय्यों के अेक पेशवा उजरते सख्यिहुना मुद्ला अली  
कारी كَارِي اللهُ الْبَارِي عَلَيْهِ رَحْمَةٌ اللهُ الْبَارِي كर्दा उदीसे पाक के तइत लिखते हैं : आ'ज  
सिकह (या'नी काबिले अे'तिमाद) उ-लमाअे किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام ने  
इरमाया है के येह उदीसे पाक उसन है और मुसाइरों को इस की  
उरत पउती है, और मशाईबे किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام से मरवी है के येह  
अन्न मुजर्ब (या'नी तजरिबा शुदा) है. (مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيحِ ج 5 ص 290)

﴿فرمانे मुस्तफ़ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ : जिस के पास मेरा ठिक छो और वोह मुज पर हुइद शरीक न पढे तो वोह लोगों में से कजूस तरीन शप्स है. (त्रिभुविय)

## जंगल में जनवर भाग जाये तो.....

आ-तमुन्नबियीन, साहिबे कुरआने मुबीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिको अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने दिल नशीन है : जब तुम में से किसी अक की सुवारी (का जनवर) वीरान जमीन में भाग जाये तो यूं पुकारे : “يَا عِبَادَ اللهِ! احْسُوا، يَا عِبَادَ اللهِ! احْسُوا” के बन्दो ! रोक दो, ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के बन्दो ! रोक दो.” अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के कुछ बन्दे रोकने वाले हैं जो उसे रोक देंगे.

(مُسْنَدُ أَبِي يَعْقُبَ ج ٤ ص ٤٣٨ حديث ٥٢٤٧)

## जब उस्तादे मोहतरम की सुवारी भाग गर्ध !

शारेहे मुस्लिम हजरते सय्यिदुना ईमाम न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इरमाते हैं : मेरे अक उस्ताजे मोहतरम जो के बहुत बडे आदिम थे, अक मर्तबा रेगिस्तान में उन की सुवारी भाग गर्ध, उन को इस हदीसे पाक का इल्म था, उन्हों ने येह कलिमात कहे (या'नी दो बार कहा : يَا عِبَادَ اللهِ! احْسُوا يَا'नी ऐ अल्लाह के बन्दो ! उसे रोक दो) तो अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ने उस सुवारी को उसी वक्त रोक दिया.

(الانكار ص ١٨١)

आप जैसा पीर छोते क्या गरज दर दर किइं

आप से सब कुछ मिला या गौसे आ'जम दस्त गीर

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इरमाने मुस्तफ़ा عَمَلِي اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद पाक न पड़े. (76)

## “अल्लाह के बन्दों” से मुराद कौन लोग हैं ?

**सुवाल (7) :** जंगल में बन्दगाने भुदा से मदद मांगने की जो तरगीब दी गई है यहाँ अल्लाह के बन्दों से मुराद कौन लोग हैं ?

**जवाब :** हजरते सय्यिदुना अल्लामा अली कारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِي हिस्ने हसीन की शर्ह, “अल डिर्तुसमीन” सफ़हा 254 पर इरमाते हैं : “(यहाँ) बन्दों से या तो फिरिश्ते या मुसल्मान जिन्न या रिजालुल गैब या’नी अब्दाल मुराद हैं.”

बे यारो मददगार जिन्हें कोई न पूछे

औसों का तुजे यारो मददगार बनाया

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

## मुद्दे से मदद क्यूं मांगें ?

**सुवाल (8) :** मान लिया के जिन्दा अेक दूसरे की मदद कर सकते हैं जंगल में बन्दों को पुकारना भी समज में आ गया के जंगल में तो आज कल पोलीस की मोबाईल भी मदद के लिये बसा अवकात दस्त-याब हो जाती है अगर्थे हदीसे पाक में पोलीस मुराद नहीं ताहम आदमी ँन से मदद तो हासिल कर सकता है और मोबाईल फोन के जरीअे भी किसी को मदद के लिये बुला सकता है. मगर “मुद्दे” से कैसे मदद मांगी जाअे ?

**जवाब :** जो वाकेई मुर्दा हो उस से बेशक मदद न मांगी जाअे मगर

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोके जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा (उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होगे. (अमल)

अम्बिया व औलिया तो पढा इरमाने के बा'द भी जिन्दा होते हैं और यूँ उम जिन्दों ही से मद्द मांगते हैं. येह उजरात जिन्दा होते हैं एन के दलायल मुला-उजा हो :

### अम्बियाअे किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ जिन्दा हैं

अम्बियाअे किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ पर महुज अेक आन मौत तारी होती है फिर कौरन उन को वैसी ही उयात या'नी जिन्दगी अता इरमा दी जाती है. जैसी दुन्या में थी. अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ की उयात (आलमे बरज्ज की जिन्दगी) इडानी, जिस्मानी, दुन्यावी है, (येह उजराते अम्बिया) बि औनिही उसी तरह जिन्दा होते हैं, जिस तरह दुन्या में थे. (इतावा २-अविया, जि. 29, स. 545) सरकारे मदीनअे मुनव्वरह, सरदारे मक्कअे मुकर्रमा كَا كِرْمَانِے صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ كَا كِرْمَانِے اِنَّ اللّٰهَ حَرَمَ عَلٰى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللّٰهِ حَيٌّ يَّرْزُقُ : या'नी अद्लाह तआला ने अम्बिया के अजसाम (या'नी जिस्मों) को मिट्टी पर उराम इरमा दिया है, अद्लाह के नबी जिन्दा रहते हैं उन्हें रिज्क दिया जाता है. (ابن ماجه २ص २११ حديث १६३७) मा'लूम हुवा, अम्बियाअे किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ जिन्दा हैं नीज सहीह अहादीसे मुभा-रका से येह भी साबित है के उज अदा इरमाते और अपने अपने मजारों में नमाजें भी पढते हैं, युनाअे उजरते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के रसूलुद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एशार्ह इरमाया : "اَلْاَنْبِيَاءُ اَحْيَاءٌ فِى قُبُورِهِمْ يُصَلُّونَ" (مُسْنَدُ اَبِي يَعْقَبِ ३ص २१६ حديث ३६१२) हैं, नमाज पढते हैं.

﴿إِنَّ مَرِي﴾. (अबुल-असद)। इरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुज पर हुइइ शरीक पढे अल्लाह उजल तुम पर रउमत भेजिगा.

उजरते सय्यिदुना ईमाम मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने इरमाया :  
 “येह उदीस सडीह है.” (فیض القدير ج ۳ ص ۲۳۹) उ-लमाये किराम  
 رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام इरमाते हैं के बा'उ अवकात ईन्सान मुकल्लफ (पाबन्द)  
 नडीं छोता इर भी लुइ अन्दोज छोने के लिये आ'माल अदा करता  
 है, जैसा के अम्बियाये किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का अपनी मुबारक  
 कब्रों में नमाज पढना डालांके (सिई दुन्या दारुल अमल है) आभिरत  
 दारुल अमल (नेकियां करने की जगह) नडीं.

### उजरते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام मजार में नमाज पढ रहे थे

उजरते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के  
 रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरमाया : शबे मे'राज (उजरते)  
 मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) के पास से डमारा गुजर हुवा वोह सुर्भ टीले के पास  
 अपनी कब्र में नमाज पढ रहे थे. (مسلم ص ۱۲۹۳ حديث ۲۳۷۴)

अम्बिया को भी अजल आनी है मगर ऐसी के इकत “आनी” है  
 इर उसी आन के बा'द उन की डयात भिस्वे साभिक वोडी जिस्मानी है  
 इह तो सभ की है जिन्दा उन का  
 जिस्मे पुरनूर भी इडानी है

(इदाईके बफ्शिश शरीक)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّی اللہُ تَعَالَى عَلَیْ مُحَمَّدٍ

### ओलियाउल्लाह भी जिन्दा हैं

कुरआने करीम से साभित है के शु-इदाये किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام  
 जिन्दा हैं न उन को मुर्दा कडो और न डी समजो. युनान्चे ईशाई  
 छोता है :

इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर कसरत से दुर्रदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुर्रदे पाक पढेना तुम्हारे गुनाहों के लिये मफ़िरत है. (बाय्ने)

وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ  
اللَّهِ أَمْوَاتٌ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَكِنْ  
لَّا تَشْعُرُونَ ﴿١٥٧﴾ (پ ٢، البقرة: ١٥٤)

तर-ज-मअे क-जुल ईमान : और  
जो भुदा की राह में मारे जायें उन्हें  
मुर्दा न कहो, बल्के वोह जिन्दा  
हैं, हां तुम्हें ञाबर नही.

मुफ़रिसरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुफ़ती अहमद यार  
आन عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَان लिखते हैं : जब येह जिन्दा हुअे तो ईन से मदद  
हासिल करना (भी) जाईज हुवा. जो हजरत ईशके ईलाही की तलवार  
से मक्तूल हुअे (या'नी क्तल किये गअे) वोह भी ईस में दाखिल हैं.  
ईसी लिये हदीसे पाक में आया के जो रूब कर मरे, जल जावे, ताउिन  
(PLAGUE) में मरे, औरत जयगी की हालत में मरे. तालिबे ईल्मे  
(दीन), मुसाफ़िर वगैरा सब शहीद हैं. (जाअल हक, स. 218) आ'ला  
हजरत, ईमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह ईमाम अहमद रजा  
आन عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ “इतावा र-जविय्या” जिल्द 29 सईहा 545  
पर इरमाते हैं : “औलियाअे किराम बा'दे वफ़ात जिन्दा हैं, मगर  
न मिस्ले अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام (कयूँके) अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की  
हयात “इहानी, जिस्मानी, दुन्यावी” है, (येह हजरते अम्बिया)  
बिल्कुल उसी तरह जिन्दा डोते हैं, जिस तरह दुन्या में थे, और  
औलियाअे किराम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ की हयात ईन से कम और शु-हदा  
से जाईद, जिन के बारे में कुरआने अजीम में इरमाया : “ईन  
(या'नी शहीदों) को मुर्दा मत कहो वोह जिन्दा हैं.” (इतावा र-जविय्या,  
जि. 29, स. 545) मुहकिकक अलल ईत्लाक, आ-तिमुल मुहदिसीन,

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: જો મુઝ પર એક દુરુદ શરીફ પઢતા હે અલ્લાહ عزوجل ઊસ કે લિયે એક કીરાત  
અજ લિખતા હે ઓર કીરાત ઉદુદ પહાડ જિતના હે. (મુરુઝિ)

હઝરતે અલ્લામા શૈખ અબ્દુલ હક મુહદિસ દેહલવી **عَلَى اللَّهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** ઇશાદ ફરમાતે હે : અલ્લાહ عزوجل કે વલી ઇસ દારે ફાની (યા'ની ખત્મ હો જાને વાલી દુન્યા) સે દારે બકા (યા'ની બાકી રહને વાલે જહાન) કી તરફ મુન્તકિલ (TRANSFAR) હો જાતે હે, વોહ અપને પરવર દગાર (عزوجل) કે પાસ જિન્દા હે, ઉન્હેં રિઝક દિયા જાતા હે ઓર ખુશ વ ખુર્મ હે લેકિન લોગોં કો ઇસ કા શુઊર (સમઝ) નહીં. (اشعة اللمعات ج ۳ ص ۲۳؛ مُلَخَّصًا)  
હઝરતે અલ્લામા અલી કારી **عَلَى اللَّهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي** ને ઇશાદ ફરમાયા : لَا فَرْقَ لَهُمْ فِي الْحَالَيْنِ وَلَكِنَّا قِيلَ أَوْلِيَاءُ اللَّهِ لَا يَمُوتُونَ وَلَكِنْ يَنْتَقِلُونَ مِنْ دَارٍ إِلَى دَارٍ  
યા'ની ઔલિયાએ કિરામ **رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام** કી દોનોં હાલતોં (યા'ની જિન્દગી ઓર મૌત) મેં અસ્લન ફર્ક નહીં, ઇસી લિયે કહા ગયા હે કે વોહ મરતે નહીં બલકે એક ઘર સે દૂસરે ઘર તશરીફ લ જાતે હે.”

(مرقاة المفاتيح للقارى ج ۳ ص ۴۰۹)

ઔલિયા હે કોન કહતા મર ગએ

“ફાની ઘર” સે નિકલે “બાકી ઘર” ગએ

## હયાતે અમ્બિયા ઓર હયાતે ઔલિયા મેં ફર્ક

આ'લા હઝરત, ઇમામે અહલે સુન્નત, મૌલાના શાહ ઇમામ અહમદ રઝા ખાન **عَلَى اللَّهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَن** ને એક સુવાલ કા જવાબ દેતે હુએ ફરમાયા : અમ્બિયાએ કિરામ **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** કી હયાતે બર-ઝખિયા (યા'ની બરઝખ કી જિન્દગી), હયાતે હકીકી હિસ્સી દુન્યાવી હે, ઇન પર તસ્દીકે વા'દએ ઇલાહિય્યહ કે લિયે મહુઝ એક આન કો મૌત તારી હોતી હે ફિર ફૌરન ઉન કો વૈસે હી હયાત અતા ફરમા દી જાતી હે. ઇસ હયાત પર વોહી અહકામે દુન્યવિયા હે, ઇન કા તર્કા (યા'ની

करमाने मुस्तक: على الله تعالى وغيره والله وسلم: जिस ने किताब में मुज पर दुरदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में  
रहेगा इरिशते उस के लिये इस्तिस्कार करते रहेंगे. (अ. 1)

विसा) बांटा न जायेगा, धन की अजवाज को निकाह इराम नीज  
अजवाजे मुतइइरात पर इदत नहीं, वोह अपनी कुबूर में भाते पीते  
नमाज पढते हैं. उ-लमा व शु-इदा की उयाते बर-जभिया (या'नी  
बरजभ की जिन्दगी) अगरे उयाते हुन्यविया (या'नी हुन्यवी जिन्दगी)  
से अइजलो आ'ला है मगर इस पर अइकामे हुन्यविया जारी नहीं  
और धन का तर्का (या'नी विसा) तक्सीम होगी, धन की अजवाज (या'नी  
बीविया) इदत करेगी. (मुलज्जस अज मक्ज्जाते आ'ला इजरत, स. 361)

### मखित की इमदाह कवी तर है

मजकूरा दलाइल से जब येह साबित हो गया के अम्बिया व  
औलिया. عَلَيْهِمُ السَّلَامُ अपने मजारात में उयात हैं, तो जिस  
दलील के साथ उन से उन की उयाते जाहिरी में मदद तलब करना  
जाइज है बिइकुल उसी दलील के बाइस हुन्या से पर्दा इरमा जाने के  
बा'द भी जाइज व दुरुस्त है. युनान्ये मुइकिक्क अलल इत्लाक,  
भातिमुल मुइदिसीन, इजरते अल्लामा शैभ अब्दुल उक मुइदिस  
देउलवी उ-नई. عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي लिखते हैं के इजरते सय्यिहुना अइमद  
बिन मरजुक. عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقُدُّوس ने मुज से दरयाइत किया के "जिन्दा की  
इमदाह जियादा कवी है या मखित की?" मैं ने कहा के "कुछ लोग कहते  
हैं के जिन्दा की इमदाह जियादा कवी (या'नी मजबूत) है और मैं कहता हूं  
के मखित की इमदाह कवी तर (या'नी जियादा मजबूत) है." शैभ ने  
इरमाया: "हां, येह बात दुरुस्त है क्यूंके वफात याइता बुजुर्ग अल्लाह  
اشعة للمعات ج ١ ص ٧٦٢" की बारगाह में उस के हां उते हैं."

﴿इरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ﴾ : जिस ने मुज पर ओक बार दुइदे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रउमतें भेजता है. (सु)

## गैरुल्लाह से मद्द मांगने के मु-तअल्लिक शाईफ़ मुफ़्ती का इतवा

शैभुल ईस्लाम हजरते सय्यिदुना शहाब रमली अन्सारी शाईफ़  
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي (मु-तवफ़्फ़ा 1004 सि.हि.) से इतवा तलब किया गया :  
 (या सय्यिदी येह ईशाद इरमाईये :) “आम लोग जो सप्तियों (या’नी  
 मुसीबतों) के वक्त म-सलन “या शैभ कुलां !” कह कर पुकारते हैं और  
 अम्बियाअे किराम व औलियाअे ईजाम عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَرَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام से  
 इरियाद करते हैं, ईस का शर-अ शरीफ़ में क्या हुकम है ?” आप  
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने इतवा दिया : “अम्बिया व मुर-सलीन व औलिया व  
 उ-लमा व सालिहीन عَلَيْهِمُ السَّلَامُ وَرَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام से उन के विसाल (या’नी  
 इन्तिकाल) शरीफ़ के बा’द भी इस्तिआनत व इस्तिम्दाद (या’नी मद्द  
 तलब करना) जाईज है.” (ताउरी रूयू ४८/१३३)

## मईम नौ जवान ने मुस्कुरा कर कहा के.....

ईमाम आरिफ़ बिल्लाह उस्ताज अबुल कासिम कुशैरी  
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं के मशहूर वलियुल्लाह हजरते अबू सईद  
 अर्राज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى इरमाते हैं के मैं ने मक्कअे मुअज़्जमा  
 में ओक नौ जवान को “बाबे बनी शैबा” पर झौत  
 शुदा पडा पाया. अयानक वोह मुजे देख कर मुस्कुराया और कहा :  
 يَا أَبَا سَعِيدٍ أَمَا عَلِمْتَ أَنَّ الْأَحْيَاءَ أَحْيَاءٌ وَإِنْ مَاتُوا وَإِنَّمَا يُنْقَلُونَ مِنْ دَارٍ إِلَى دَارٍ-  
 या’नी ओ अबू सईद ! क्या आप नहीं जानते के अल्लाह उंस के  
 मउबूअ (प्यारे) बन्दे जिन्दा हैं, अगरेये वोह झौत हो जाअें, मुआ-मला  
 तो सिर्फ़ इतना है के वोह तो ओक घर से दूसरे घर की तरफ़ मुन्तकिल  
 किये जाते हैं.” (رساله كُثَيْرِي ص ३६)

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقِيمًا﴾ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ : જો શાપ્સ મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્મત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (પ્રા. ૧)

## પુદા ઈસ કા હર પ્યારા ઝિન્દા હૈ

લલિયુલ્લાહ કી બા'દે વફાત વાલી હયાત ભી કયા ખૂબ હૈ ! કે ઓલિયા કી શાન ભી બયાન કર દી ઓર દેખને વાલે કા નામ ભી બતા દિયા ! ઈસી સે મિલતી જુલતી એક ઓર હિકાયત મુલા-હઝા હો યુનાન્યે હઝરતે સય્યિદુના અબૂ અલી (عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ) ફરમાતે હૈ કે મેં ને એક ફકીર કો કબ્ર મેં ઉતારા, જબ કફન ખોલા ઓર ઉસ કા સર ખાક પર રખા તાકે અલ્લાહ ઈસ કી ગુરબત પર રહમ ફરમાએ, તો ઉસ ને અપની આંખે ખોલ દી ઓર મુઝ સે ફરમાયા : “ઐ અબૂ અલી ! આપ મુઝે ઉસ કે સામને ઝલીલ કરતે હૈ જો કે મેરે નાઝ ઉઠાતા હૈ !” મેં ને સંભલ કર કહા : યા સય્યિદી (યા'ની ઐ મેરે સરદાર ! ) કયા મૌત કે બા'દ ભી ઝિન્દગી હૈ ? ઉસ ને જવાબ દિયા : “بَلَى يَا نَبِيَّ اللَّهِ أَتَىٰ كُلُّ نَفْسٍ مِّنْهُم يَوْمَئِذٍ لَّحْنَهَا” પુદા કા હર મહબૂબ (યા'ની પ્યારા બન્દા) ઝિન્દા હૈ.”

(شرحُ الصَّادِقِ ص ૨૦૮)

ઓલિયા કિસ ને કહા કે મર ગએ

કેદ સે છૂટે વોહ અપને ઘર ગએ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

સુવાલ (9) : મેં હ-નફી હૂં, યેહ બતા દીજિયે કયા મેરે ઈમામ, ઈમામે આ'ઝમ અબૂ હનીફા (عَلِيُّ بْنُ أَبِي طَالِبٍ) ને ભી કભી ગૈરુલ્લાહ સે મદદ માંગી હૈ ?

﴿इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदें पाक न पढा तउकीक  
 वोउ भद भप्त हो गया. (अिन)।

जवाब : क्यूं नही। करोडों उ-नफ़िय्यों के पेशवा उजरते सय्यिदुना  
 र्थमाभे आ'उम अबू उनीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ आरगाहे रिसालत  
 में मदद की दर-पवास्त करते हुअे “कसीदअे  
 नो'मान” में अर्र करते हैं :

يَا اَكْرَمَ الثَّقَلَيْنِ يَا كَنْزَ الْوَرَىٰ جُدِّ لِي بِجُودِكَ وَاَرْضِنِي بِرِضَاكَ

اَنَا طَامِعٌ بِالْجُودِ مِنْكَ لَمْ يَكُنْ لِأَبِي حَنِيفَةَ فِي الْأَنَامِ سِوَاكَ

या'नी अै जिन्नो र्थन्स से बेउतर और ने'मते र्थलाही उर्रुजल के  
 भजाने ! अद्लाउ उर्रुजल ने जो आप को र्थनायत इरमाया है उस में से  
 मुजे भी अता इरमा र्थये और अद्लाउ उर्रुजल ने आप को जो राजी किया  
 है आप मुजे भी राजी इरमा र्थये. मैं आप की सभावत का उम्मीद वार  
 हूं, आप के सिवा अबू उनीफ़ा का मज्लूक में को र्थ नही।

(قصيدة نعمانيه مع الخيرات الحسان ص ٢٠٠)

पडे मुज पर न कुछ उर्रताद या गौस

मदद पर हो तेरी र्थमदाद या गौस

(जौके ना'त)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

“या अली मदद” कहने का सुभूत

सुवाल (10) : “या अली मदद” कहने की सराहत के साथ अगर  
 दलील मिल ज्ञअे तो मदीना मदीना.

जवाब : पिछले सफ़हात पर गैरे भुदा से उस की जाहिरि उयात  
 और आ'दे ममात मदद मांगने के दला र्थल गुजरे. ताहम सरा-हतन  
 “या अली मदद” कहने की दलील भी मुला-उजा हो युनान्ये भेरे



﴿إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَأِئِمَّةِ الْمَلِكِ إِنَّكَ فَكْرٌ مِّنْ ذِكْرِ الْمَلَكِ عَلَىٰ رَأْسِ السُّؤْمُرِ﴾ : जो शम्स मुज पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (गुरान)

के या अली या अली (कहने) को शिर्क ठहराने की क्या सजा मिली ! न नाहक मुसल्मानों को मुश्रिक कहते न अगलों पिछलों के मुश्रिक बनने की मुसीबत सहते, इस से येही बेहतर के राहे रास्त पर आये, सख्ये मुसल्मानों को मुश्रिक न बनाये वरना अपनों के इमान की झिंक इरमाये. (इतावा र-जविय्या मुभर्रज, जि. 9, स. 821, 822 मुलम्भसन)

सप्त दृशमन है हसन की ताक में

अल मद्द महुबूबे यजदां अल गियास

(जौके ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“या गौस” कहने का सुभूत

सुवाल (11) : क्या इसी तरह “या गौस” कहने का सुभूत भी मिल सकता है ?

जवाब : क्यूं नही. यूं तो काफ़ी दलायल गुजरे, सराहत भी हाजिर है, युनान्ये मशहूरो मा'रुइ ह-नई आदिम हजरते अल्लामा मौलाना मुल्ला अली कारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي नकल करते हैं : हुजूर गौसे आ'जम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي इरमाते हैं : “जो कोई रन्जो गम में मुज से मद्द मांगे तो उस का रन्जो गम दूर होगी और जो सप्तरी के वक्त मेरा नाम ले कर मुझे पुकारे तो वोह शिदत दइअ होगी और जो किसी हाजत में रब्बुल इज्जत की तरफ मुझे वसीला बनाये तो उस की हाजत पूरी होगी” हजरते अल्लामा मौलाना अली कारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي मजीद लिखते हैं : हुजूर गौसे पाक नमाजे गौसिया की तरकीब बताते हुअे ईशाद इरमाते हैं के दो रकअत नइल पढे, हर रकअत में सू-रतुल इतिहा के बा'द

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقْبَلًا﴾ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पढा तलकीक वो लु भद भपत हो गया. (अन)

11, 11 बार सू-रतुल ँष्लास पढे, सलाम कैर कर 11 मर्तबा सलातो सलाम (म-सलन اللّٰهُ يارَسُولَ عَلَيْكَ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ) पढे फिर भगदाद की तरफ़ (पाक व छिन्द में जानिबे शिमाल) 11 कदम चले हर कदम पर मेरा नाम ले कर अपनी छाजत अर्ज करे और ये ल दौ शे'र पढे :

أَيُّدْرِكُنِي ضَيْمٌ وَأَنْتَ دَخِيرَتِي وَأُظْلَمُ فِي الدُّنْيَا وَأَنْتَ نَصِيرِي  
وَعَارُ عَلِيٍّ حَامِي الْحَمِي وَهُوَ مُنْجِدِي إِذَا ضَاعَ فِي الْبَيْدَاءِ عَقَالٌ بَعِيرِي

क्या मुझ पर जुल्म किया जायेगा ? जब के आप मेरा सरमाया हैं और क्या दुन्या में मुझ पर सितम किया जायेगा ? जब के आप मेरे मददगार हैं. गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के पुस्त पनाह होते हुअे अगर जंगल में मेरे गिंट की रस्सी गुम हो जाये तो ये ल बात मुहाफ़िज के लिये बाँधसे आर है.

ये ल कह कर उजरते मुल्ला अली कारी क़री اللّٰهُ الْبَارِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : وَقَدْ جُرَّبَ ذَلِكَ مَرَارًا فَصَحَّ : तजरिबा किया गया, दुरुस्त निकला. (نزّهة الخاطر ص ११)

हुस्ने नियत हो जाता तो कल्मी करता ही नहीं  
आजमाया है यगाना है "दोगाना" तेरा

(हदाएके बफ़िश शरीफ़)

भीठे भीठे ँस्लामी भाँयों ! देखा आप ने ! हुजूरे गौसे आ'जम اللّٰهُ الْكَرِيمُ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمُ को ता'लीम देते हैं के मुसीबत के वक्त मुझ से मदद मांगो और ल-नफ़िय्यों के मो'तबर आलिम उजरते सय्यिदुना मुल्ला अली कारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي عَلَيْهِ ँसे बिगैर तरदीद नकल कर के फ़रमाते हैं के "ँस का तजरिबा किया गया, बिल्कुल सही ल है." मा'लूम हुआ

इरमऱने मुस्तकऱ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबऱ सुबुद और दस भरतबऱ शऱम दुइदे पऱक पढऱ  
 (उसे कियऱमत के दिन मेरी शकऱअत भिलेगी. عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ)

के बुजुर्गी से बऱ'दे वकऱत मऱंगनऱ न सिर्फ ञऱरुज बल्के इऱअेदऱ मन्द  
 भी है. (ञअल उक, स. 207)

### गुसे पऱक के तीन र्भमऱन अइरुऱ घशऱदऱत

मुडकिक अलल र्भत्वऱक, ञऱतिमुल मुडदिसीन, उजरते अल्लऱमऱ  
 शैभ अणुदुल उक मुडदिस देडलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُبْرَى ने “अणुऱरुल  
 अणुऱर” में सरकरे गुसे आ'उम اللَّهُ الْأَكْرَمُ के ञु मुबऱरक अकवल  
 नकल इरमऱअे हें उन में से तीन मुलऱ-उजऱ हें : **1** मेरे मुरीद कऱ पदअे  
 र्भइत अगऱ मशरिद में ञुल रडऱ हऱ और मैं यऱडे मगरिब में हुवऱ ञब  
 भी उस की पदऱ पऱशी कइंगऱ **2** मैं तऱ कियऱमत अपने मुरीदों की दस्त  
 गीरी (यऱ'नी र्भदऱद) करतऱ रइंगऱ अगऱर्ये वऱड सुवऱरी से गिरे **3** ञु  
 किसी सणुती (मुश्किल) में मुजे पुकरे (यऱ'नी अल मदद यऱ गुस कडे) उसे  
 कुशऱ-दगी डऱसिल हऱ (यऱ'नी मुश्किल हल हऱ). (अखऱरऱखिरऱरऱ ص 19)

कसम हें के मुश्किल को मुश्किल न पऱयऱ  
 कडऱ हम ने जिस वकत “यऱ गुसे आ'उम”

(ञुके नऱ'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सुवल (12) : शैभ अणुदुल कऱदिर ञलऱनी قَدِّسَ سَمَاءُ السَّمَوَاتِ तऱ अ-रभी  
 व इऱरसी बऱलते थे, मुणुतलिकु बऱलियों म-सलन उदू, अंग्रेजी,  
 पशुतऱ, पंञऱभी वगैरऱ ञबऱन में मदद के लिये पुकरने पर वऱड किस  
 तरड मदद इरमऱअेंगे ?

ञवऱब : कुर्ध औरत अपने शऱडर कु यऱडे किसी भी ञबऱन में  
 सतऱअे उस की ञुञऱ बनने वऱली ञन्तऱ दूर सडऱ लेती है युनऱन्ये,

﴿فرمانे मुस्तफ़ا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ : जिस के पास मेरा ठिक हुआ और उस ने मुझ पर दुइद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

## जन्तती हूर का दूसरी ज़बानें समझ लेना

﴿فرمانे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ है : जब कोई औरत अपने शोहर को दुन्या में सताती है तो उस की बीवी से जन्तती हूर कहती है : لَا تُؤْذِيهِ فَإِنَّكَ اللَّهُ فَإِنَّمَا هُوَ عِنْدَكَ دَخِيلٌ يُؤْشِكُ أَنْ يُفَارِقَكَ إِنِّيْنَا . या'नी अदलाह तुझे गारत करे एसे तकलीफ़ न पड़ोया वोह तेरे पास यन्द् दिन का मेहमान है अन्करीब वोह तुज से जुदा हो कर हमारे पास आने वाला है. (ترمذی ج ۲ ص ۳۹۲ حدیث ۱۱۷۷) जब हूर दूसरी ज़बान समझ सकती है तो औलिया के सरदार सरकारे गौसे आ'जम वफ़ात के बा'द दूसरी ज़बानें क्यूं नही समझ सकते !

## हदीसे पाक की धिमान अइरोज शर्ह

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार आन عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ एस हदीसे पाक के तह्त मिरआत जिल्द 5 सफ़हा 98 पर इरमाते हैं : “एस हदीस से यन्द् मस्अले मा'लूम हुअे, अेक येह के हूरें नूरानी होने की वजह से जन्तत में जमीन के वाकिआत देअती हैं, देओ येह लडाई हो रही है किसी घर की बन्द कोठरी में और हूर देअ रही है ! यहां (साहिबे) मिरकात (हज़रते सय्यिदुना मुदला अली कारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَةِ) ने इरमाया के मलाअे आ'ला दुन्या वालों के अेक अेक अमल पर अबरदार हैं. दूसरे येह के हूरों को लोगों के अन्जाम की अबर है के कुलां मोमिन मुत्तकी मरेगा. (जभी तो कहती है, अन्करीब तुझे छोड कर हमारे पास आअेगा) तीसरे येह के हूरों को लोगों के मकाम की अबर, के बा'दे क्रियामत येह जन्तत के कुलां द-रजे में रहेगा.

﴿فرمانे मुस्तका صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم﴾ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीफ पड़ेगा में क्रियामत के दिन उस की शकाअत करेगा. (कोबाल)

यौथे येह के हूरें आज भी अपने भावन्द ईन्सानों को जानती पहचानती हैं, पांयवां येह के आज भी हूरों को हमारे दुष से दुष पहोयता है, हमारे मुभाविक से नाराज होती हैं. जब हूरों के ईल्म का येह डाल है तो हुजूर صلى الله تعالى عليه و آلہ وسلم जो तमाम अल्क से बडे आलिम हैं उन के ईल्म का क्या पूछना !” मुफ्ती साहिब आगे यल कर मजीद फरमाते हैं : छटे येह के हुजूर صلى الله تعالى عليه و آلہ وسلم जन्त के डालात (और) हूरों के कलाम से जबरदार हैं मगर येह कलाम वोह डी हूर करती है जिस का जौज (या'नी शोहर) उस घर में हो. या'नी तिरमिजी में येह हदीस गरीब है ईब्ने माजह की रिवायत में नहीं मगर येह गराबत मुजिर नहीं, क्यूंके ईस हदीस की ताईद कुरआने करीम से हो रही है. रब तआला फिरिशतों के मु-तअद्लिक फरमाता है :

يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ﴿١٢﴾ (الانفطار: ١٢)

तर-ज-मअे क-जुल ईमान : के जानते हैं जो कुछ तुम करो.

और ईब्लीस व जुर्रियते ईब्लीस के मु-तअद्लिक फरमाता है :

إِنَّهُ يَرَاكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ط (پ ٨٠، الاعراف: ٢٧)

तर-ज-मअे क-जुल ईमान : बेशक वोह और उस का कुम्भा तुम्हें वहां से देखते हैं के तुम उन्हें नहीं देखते.

जब हदीस की ताईद कुरआने मज्हद से हो जाओ तो “जईफ” भी “कवी” हो जाती है. (मिरआत, जि. 5, स. 98) जहर कैफ आलमे आभिरत के मुआ-मलात वहुनी (या'नी अल्लाह तआला की तरफ से अता कदी) और भिलाई आदत हैं उन्हें ईस दुन्या के मुआ-मलात पर क्रियास नहीं किया जा सकता. या'नी जो उमूर दुन्या में करनी (कोशिश से डसिल किये जाते) हैं वोह वहां महुज वहुनी हो जाते हैं.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : મુઝ પર દુરૂદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમહારે લિયે તહારત હૈ. (બુખારી)

હઝરતે અલ્લામા અલી કારી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي ફરમાતે હૈં :  
 يَا'नी ક્યૂંકે આખિરત કે મુઆ-મલાત  
 ખિલાફે આદત પર મબની હૈં. (مِرْقَاة ج ١ ص ٣٠٤ تَحْتِ الْحَدِيثِ ١٣١)

રાસ્તા પુરખાર, મન્જિલ દૂર, બન સુનસાન હૈ  
 અલ મદદ એ રહનુમા ! યા ગૌસે આ'ઝમ દસ્ત ગીર  
 (વસાઈલે બખ્શિશ, સ. 522)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**જબ અલ્લાહ મદદ કર સકતા હૈ તો દૂસરે સે મદદ ક્યૂં માંગો ?**

**સુવાલ (13) :** ઉસ કે બારે મેં આપ કયા કહેંગે જો યૂં ઝેહન બના કર સિફ અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ હી સે મદદ માંગા કરે કે જબ અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ મદદ પર કાદિર હૈ તો ફિર એહતિયાત ઈસી મેં હૈ કે સિફ ઉસી સે મદદ માંગી જાએ.

**જવાબ :** બેશક અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ મદદ પર કાદિર હૈ ઓર કારસાઝે હકીકી ભી વોહી હૈ, અગર કોઈ સિફ અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ હી સે મદદ માંગા કરે તો ઉસ પર કોઈ ઈલ્લામ નહીં, તાહમ “એહતિયાતન દૂસરોં સે મદદ ન માંગના” શૈતાન કા બહુત બડા ઓર બુરા વાર હૈ કે ઉસ ને ઈસ શખ્સ કા ઝેહન મુન્તશિર કર રખા હૈ જભી તો “એહતિયાત” કે નામ પર ઈસ “વસ્વસે” કે મુતાબિક અમલ કર રહા હૈ કે હો સકતા હૈ અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કે ઈલાવા કિસી ઓર સે મદદ માંગના કોઈ ગલત કામ હો ! અગર યેહ વસ્વસે કા શિકાર ન હોતા તો ઈસે “એહતિયાત” કા નામ દેતા હી ક્યૂં ! ઉસે અપને વસ્વસોં કા ઈલાજ કરના ઝરૂરી હૈ, ક્યૂંકે

﴿۱﴾ ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : તુમ જહાં ભી હો મુઝ પર દુરુદ પઢો કે તુમહારા દુરુદ મુઝ તક પહોંચતા હૈ. (طہران) ۱۶: ۱۰۷)

ઈસ વસ્વસે કી પૈરવી મેં બહુત સારી કુરઆની આયતોં ઓર મુબારક હદીસોં કી મુખા-લફત પાઈ જા રહી હૈ, અલ્લાહ વ રસૂલ ફરમા રહે હેં ઓર યેહ હૈ કે અપની “વસ્વસા માર્કા એહતિયાત” પર અડા હુવા હૈ ! એસે શખ્સ કો કુરઆને કરીમ કી ઈન 6 આયાતે મુબારકા પર ઠન્ડે દિલ સે ગૌર કરના ચાહિયે જિન મેં ગૈરે ખુદા સે મદદ લેને કા સાફ સાફ અલ્ફાઝ મેં તઝકિરા મૌજૂદ હૈ. યુનાન્થે

﴿1﴾ નેકી મેં એક દૂસરે કી મદદ કરો :

وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۗ تَر-જ-મએ કન્ઝુલ ઈમાન : ઓર નેકી  
 وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۗ ઓર પરહેઝ ગારી પર એક દૂસરે કી  
 મદદ કરો ઓર ગુનાહ ઓર ઝિયાદતી  
 (۲: ۱۶۷, المائدة)

﴿2﴾ સબ્ર ઓર નમાઝ સે મદદ ચાહો : تَر-જ-મએ  
 کَنْزُولُ الْإِيمَانِ : ઓર સબ્ર ઓર નમાઝ સે મદદ ચાહો. (۴۰: البقرة)

﴿3﴾ સિકન્દર ઝુલ કરનેન رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ને મદદ માંગી : જબ હઝરતે સય્યિદુના સિકન્દર ઝુલ કરનેન رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ને જાનિબે મશરિક સફર ફરમાયા તો એક કૌમ કી શિકાયત પર યાજૂજ, માજૂજ ઓર ઉસ કૌમ કે દરમિયાન દીવાર કાઈમ કરતે હુએ ઉસ કૌમ કે અફરાદ સે ઈશાદિ ફરમાયા : تَر-જ-મએ કન્ઝુલ ઈમાન : તો મેરી મદદ તાકત સે કરો. (۹۵: الكهف)

﴿4﴾ દીને ખુદા કી મદદ કરો : اِنَّ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ ۗ ઈને ખુદા કી મદદ કરોગે અલ્લાહ તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઈમાન : અગર તુમ દીને ખુદા કી મદદ કરોગે અલ્લાહ તુમહારી મદદ કરેગા. (۷: الحج)

﴿5﴾ નબી કા ગૈરુલ્લાહ સે દીન કે

﴿करमाने मुस्तफ़ा﴾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुइडे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रउमते नाज़िल करमाता है. (पूरान)

लिये मदद तलब करमाना : उजरते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह

﴿عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام﴾

مَنْ أَنْصَارِيَّ إِلَى اللَّهِ ط قَالَ  
الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ ج  
(پ ۳، ال عمران: ۵۲)

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : कौन मेरे मददगार होते हैं अल्लाह की तरफ़ ? उवारिख्यों ने कडा : उम दीने भुदा के मददगार हैं.

﴿6﴾ अल्लाह उरुल्लाह को मददगार करमाना :

فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ  
وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ  
بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ﴿۳﴾ (التحریم: ۴)

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : तो बेशक अल्लाह इन का मददगार है और जिब्रील और नेक ईमान वाले और ईस के बा'द इरिश्ते मदद पर हैं.

कुन का डाकिम कर दिया अल्लाह ने सरकार को  
काम शाओं से लिया है आप ने तलवार का

(सामाने अफ़िशश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

**कोई इर्टे अशर गैरे भुदा की मदद के बिगैर  
रह ही नहीं सकता !**

सुवाल (14) : क्या आप के कलने का मतलब येह है के कोई इर्टे अशर गैरे भुदा की मदद के बिगैर रह ही नहीं सकता ?

जवाब : ज़ो हां. म-सलन आप कार में ज़ा रहे हैं, अयानक आप की कार रोड पर “अउ” गई, धक्के देने की हाजत पेश आई ! क्या करेंगे ?

﴿فرمانے मुस्तफا صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم﴾ : जिस के पास मेरा ठिक छो और वोह मुज पर दुरुद शरीक न पढे तो वोह लोगो में से कजूस तरीन शपस है. (ज़िज़ी)

ला मुहाला राहगीरों से ही अर्ज करना होगा के बराबे मेहरबानी जरा धक्का लगा दीजिये ! छो सकता है बा'ज रहूम भा कर धक्के लगाअें और गाडी यल पडे ! देभा आप ने ! आप को हाजत पेश आई, आप ने गैरे भुदा से हाजत रवाई याही, उन्हों ने मदद कर दी और आप की मुश्किल कुशाई छो गई ! अगर आप कहे के येह तो यलते फिरते जिन्दा ईन्सानों ने मदद की ! तो लीजिये बा'दे वफ़ात मदद की औसी दलील अर्ज करता हूं के ईस "मदद" का हर मुसल्मान असर लिये हुअे है युनान्ये

### 50 की जगह पांच नमाओं कैसे लुधें ?

उजरते सय्यिदुना अनस रضى الله تعالى عنه ने इरमाया : शह-शाहे मदीना صلى الله تعالى عليه وآله وسلم का इरमाने आलीशान है के अद्लाह एरुजल ने मेरी उम्मत पर पयास नमाओं इर्ज इरमाई थीं. जब मैं मूसा (عليه الصلوة والسلام) के पास लौट कर आया तो मूसा (عليه الصلوة والسلام) ने दरयाफ़त किया के अद्लाह तभा-र-क व तआला ने आप (صلى الله تعالى عليه وآله وسلم) की उम्मत पर क्या इर्ज किया है ? मैं ने उन्हें बताया तो कहने लगे : अपने रब तआला के पास लौट कर जाईये, आप (صلى الله تعالى عليه وآله وسلم) की उम्मत ईतनी ताकत नहीं रभती. मैं लौट कर अद्लाह एरुजल के पास गया, उन से कुछ डिस्सा कम कर दिया गया. जब फिर मूसा (عليه الصلوة والسلام) के पास लौट कर आया तो उन्हों ने मुजे फिर लौटा दिया. अद्लाह एरुजल ने इरमाया : अच्छा पांच हैं और पयास की काईम मकाम हैं कयूके हमारे कौल में तबदीली नहीं छोती. मूसा (عليه الصلوة والسلام)

﴿فرمانे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद पाक न पड़े. (१६)

के पास लौट कर आया. उन्हीं ने कहा : फिर अद्लाह तबा-२-३ व तआला के पास लौट जाँये. मैं ने जवाब दिया : मुझे तो अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ से शर्म महसूस होने लगी है. (ابن ماجه १६६ १३९९ حدیث) देभा आप ने ! उजरते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلِيُّ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की अपनी वफ़ाते ज़ाहिरि के ढाँह उजार भरस बा'द उम्मते मुस्तफ़ा की येह मद्द इरमाँ के शबे मे'राज में पयास नमाओं के बजाये पांय करा दीं. अद्लाह तआला जानता था के नमाओं पांय रहेंगी मगर पयास मुकर्रर इरमा कर फिर दो प्यारों के जरीअे से पांय मुकर्रर इरमाँ. यहाँ दिलयस्प बात येह है के जो लोग शैतान के वस्वसों में आ कर वफ़ात याफ़तगान की मद्द और तआवुन का ईन्कार कर देते हैं वोह भी 50 नहीं पांय नमाओं ही पढते हैं डालाँके पांय नमाओं के तकर्रर में यकीनी तौर पर गैरुल्लाह की मद्द शामिल है !

### जन्नत में भी गैरुल्लाह की मद्द की हाजत

जन्नत में भी गैरे फुदा की मद्द की हाजत होगी, जो हां ! अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाअे गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आलीशान है : “जन्नती जन्नत में उ-लमाअे किराम (رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام) के मोहताज होंगे, इस लिये के वोह हर ज़ुमुआ को अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ के दीदार से मुशरफ़ होंगे. अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरमाअेगा : “تَمَنُّوا عَلَيَّ مَا شِئْتُمْ” या'नी मुज से मांगो जो याहो !” वोह जन्नती, उ-लमाअे किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام की तरफ़ मु-तवज्जह होंगे के अपने रब्बे करीम से क्या मांगें ? वोह इरमाअेगे : “येह मांगो वोह मांगो.”

﴿قرمانه मुस्तफا صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم﴾ जिस ने मुज पर रोके जुमुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस के दो सो साल  
 के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अमाल)

तो जैसे लोग दुन्या में  
 उ-लमाअे किराम (رحمهم الله السلام) के मोहताज थे जन्नत में भी उन के  
 मोहताज होंगे.” (الجامع الصغير للسيوطي ص ۱۳۰ حديث ۲۲۳۰)

ईन्सान आम तौर पर जिन्दगी के हर मोड पर दूसरे का  
 मोहताज रहता है, कभी मां बाप का, कभी दोस्त व अहबाब का,  
 कभी पोलीस वालों का तो कभी राह चलते आम आदमी का. औसी  
 सूरत में वोह “मोहताज” रहने में काम्याब भी किस तरह हो  
 सकता है ! हां जो वाकेई वस्वसों का शिकार नहीं अल्लाह عزّوجلّ की  
 अता से दूसरों को सख्ये दिल से मददगार तस्लीम करता है बा वुजूद  
 ईस के वोह सिर्फ़ अल्लाह عزّوجلّ ही से मदद मांगता है तो ईस में  
 कोई मुजा-यका नहीं.

तू हू नाईबे रब्बे अकबर प्यारे हर हम तेरे दर पर

अहले हाजत का हू मेला صلی الله علیک وسلم

(सामाने अफ़िश)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

**क्या गैरुल्लाह से मदद मांगना कभी वाजिब भी होता है ?**

सुवाल (15) : क्या कोई औसी भी सूरत है जिस में गैरुल्लाह से  
 मदद मांगना वाजिब हो जाता है ?

जवाब : जो हां, बा'ज सूरतें औसी हैं जहां गैरुल्लाह से मदद  
 मांगना वाजिब होता है और बा'ज हालात में अ सूरते कुदरत  
 अन्दे पर भी वाजिब हो जाता है के वोह मदद करे. ईस जिम्न में

﴿فَرَّامَنَ مُسْتَكْفًا عَلَى اللّٰهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ : मुज पर दुइद शरीक पढे अल्लाह तुम पर रलमत भेजेगा. (अिन मरु)

वोड किंकी जूळथय्यात पेश किये जाते हैं जिन में मदद (तआवुन) मांगने और मदद करने के वुजूब (या'नी वाजिब होने) का तजकिरा है.

### वोह मकामात जहां मदद मांगना वाजिब है

(1) अगर (लिबास पास नहीं और ऐसी सूरत है के नंगे नमाज पढेगा और) दूसरे के पास कपडा है और गालिब गुमान है के मांगने से दे देगा, तो (अ सूरते लिबास मदद) मांगना वाजिब है. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 485) (2) अगर अपने साथी के पास पानी है और येह गुमान है के (अ सूरते पानी मदद) मांगने से दे देगा तो मांगने से पहले तयम्मुम जाईज नहीं फिर अगर नहीं मांगा और तयम्मुम कर के नमाज पढ ली और बा'दे नमाज मांगा और उस ने दे दिया या बे मांगे उस ने भुद दे दिया तो वुजू कर के नमाज का ईआदा (या'नी दोबारा पढना) लाजिम है और अगर मांगा और न दिया तो नमाज छो गई और अगर बा'द को ली न मांगा जिस से देने न देने का डाल भुलता और न उस ने भुद दिया तो नमाज छो गई और अगर देने का गालिब गुमान नहीं और तयम्मुम कर के नमाज पढ ली जब ली येही सूरतें हैं के बा'द को पानी दे दिया तो वुजू कर के नमाज का ईआदा करे वरना छो गई. (औजन, स. 348)

### वोह मकामात जहां मदद करना वाजिब है

(1) कोई मुसीबत जदा इरियाद कर रहा हो, उसी नमाजी को पुकार रहा हो या मुत्वकन किसी शप्स को पुकारता हो या कोई डूब रहा हो या आग से जल जाओगा या अन्धा राहगीर कुंओं में गिरा याडता हो, ईन सब सूरतों में (नमाज) तोड देना वाजिब है, जब के येह (नमाजी) उस

करमाने मुस्तक: صلى الله تعالى عليه و آله وسلم: मुज पर कसरत से दुइदे पाक पढे बेशक तुम्हारा मुज पर दुइदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के विये मग्दिरत है. (भा. 1)

के बयाने पर कादिर (या'नी कुदरत रभता) डो. (अज्ज, स. 637) **(2)** मां बाप, दादा दादी वगैरा **उसूल<sup>1</sup>** के मज्ज बुलाने से नमाज कत्अ करना (या'नी तोडना) जा'रज नहीं, अलबत्ता अगर इन का पुकारना भी किसी बडी मुसीबत के विये डो, जैसे डीपर मज्जूर हुवा तो तोड दे (और उन की मदद को पछोये), येह हुकूम ईर्ज (रकअतों) का है और अगर नइल नमाज है और उन को मा'लूम है के नमाज पढता है तो उन के मा'मूली पुकारने से नमाज न तोडे और ईस का (नइली) नमाज पढना उन्हें मा'लूम न डो और पुकारा तो तोड दे और जवाब दे, अगरे मा'मूली तौर से बुलाओं. (अज्ज, स. 638) **(3)** कोई सो रखा है या नमाज पढना भूल गया तो जिसे मा'लूम डो उस पर वाजिब है के (उस की ईस तरह मदद करे के) सोते को जगा दे और भूले हुअे को याद दिला दे. (अज्ज, स. 701) **(4)** भूल कर आया या पिया या जिमाअ किया रोजा फासिद न हुवा ज्वाह वोह रोजा ईर्ज डो या नइल. और रोजे की निखत से पडले येह चीजें पाई गई या बा'द में, मगर जब याद दिलाने पर भी याद न आया के रोजादार है तो अब फासिद डो जाअेगा, बशर्ते के याद दिलाने के बा'द येह अइआल वाकेअ हुअे डों मगर ईस सूरत में कइफारा लाजिम नहीं. **(5)** किसी रोजादार को इन अइआल में देभे तो याद दिलाना वाजिब है, (उस की ईस तरह मदद न की या'नी) याद न दिलाया तो गुनहगार हुवा, मगर जब के वोह रोजादार बहुत कमजोर डो के याद दिलाअेगा तो वोह जाना छोड देगा और कमजोरी ईतनी बढ जाअेगी के रोजा रभना दुश्वार डोगा और आ लेगा तो रोजा भी अखी तरह पूरा कर लेगा और दीगर ईबादतें भी अपूबी अदा

1 : म-सलन मां, नानी, परनानी ईसी तरह डीपर तक नीज बाप, दादा, परदादा ईसी तरह डीपर तक येह सब "उसूल" कहलाते हैं

﴿فَرَمَانَهُ مُسْتَقْبِلَ عَسَىٰ اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ : जो मुझ पर एक दुःख शरीक पढता है अल्लाह उर उस के लिये एक कीरात अज लिखता है और कीरात उदुद पछाड जितना है. (अजरात)

कर लेगा तो इस सूरत में याद न दिलांना बेहतर है. (अजान, स. 981)

(6) जो शप्स (कुरआने करीम) गलत पढता हो तो सुनने वाले पर (इस अन्दाज में मद्द करना) वाजिब है के बता दे, बशर्ते के बताने की वजह से कीना व हसद पैदा न हो. इसी तरह अगर किसी का मुसहफ़ शरीफ़ (कुरआने पाक) अपने पास आरियत (या'नी कुछ वक्त के लिये) है, अगर उस में क़िताबत (लिखाई) की ग-लती देखे, बता देना (के येह भी एक मद्द ही की सूरत है जो के) वाजिब है. (अजान, स. 553)

है इन्तिजामे दुन्या इमदादे बाहमी से

आ जअगी बराबी इमदाद की कमी से

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

सुवाल (16) : कुरआने करीम में है : (پ۰۱۱۱:۱۰۰) وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ (प॰) : “अल्लाह के सिवा इन को न पुकारो.” मा'लूम हुवा के गैरे भुदा को पुकारना शिर्क है.

जवाब : इस आयत में مِنْ دُونِ اللَّهِ (या'नी अल्लाह के सिवा) को पुकारने से मन्अ किया गया है यहां मुराद भुत हैं और पुकारने से मुराद इबादत है. (تفسير طبري ج ۱ ص ۱۱۸) आ'ला उजरत عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى (تفسير طبري ج ۱ ص ۱۱۸) उपर बयान कर्दा आयत के हिस्से का तरजमा यूं इरमाते हैं : “और अल्लाह के सिवा बन्दगी न कर.” दूसरी आयात इस मा'ना की ताईद करती हैं म-सलन अल्लाह तआला इरमाता है :

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ

तर-ज-मअे कन्जुल इमान : और अल्लाह के साथ दूसरे भुदा को न

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ

पूज उस के सिवा कोई भुदा नहीं.

(پ۰۲۰: القصص: ۸۸)

मा'लूम हुवा के गैरे भुदा को भुदा समज कर पुकारना शिर्क है क्यूंके

﴿इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ﴾: जिस ने किताब में मुज पर दुरदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में  
रहेगा किरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (अब्रान)

येह गैरे फुदा की ईबादत है. (मजीद तफ़सीलात के लिये हजरत  
मुफ़्ती अहमद यार आन عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان की किताब “ईल्मुल कुरआन”  
का मुता-लआ इरमाईये)

अल्लाह की अता से हें मुस्तफ़ा मददगार  
हें अम्बिया मदद पर हें औलिया मददगार  
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सुवाल (17): मुश्रिकीन भुतों से और आप नबियों और वलियों से  
मदद मांगते हैं, क्या दोनों शिर्क में बराबर न हूँ?

जवाब : **مَعَادَ اللّٰهِ** (या'नी अल्लाह एउरुजल की पनाह) दोनों का  
मुआ-मला हरगिज अेक जैसा नहीं, मुश्रिकीन का अकीदा येह  
है के अल्लाह एउरुजल ने भुतों को उलूहियत दे दी (या'नी मा'बूद  
बना दिया) है. नीज वोह भुतों वगैरा को सिफ़ारिशी और वसीला  
समजते हैं और भुत झिल हकीकत अैसे नहीं हें. **الْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ**  
हम मुसल्मान किसी मुकर्रब से मुकर्रब हत्ता के मलभूबे रब,  
ताजदारे अरब, सरापा लाईके ता'जीभो अदब  
**صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ** की भी उलूहियत (या'नी मुस्तहिके ईबादत  
होने) के काईल नहीं हें, हम तो अम्बियाअे किराम **الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ**  
और औलियाअे ईजाम **رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام** को अल्लाह एउरुजल का भन्दा  
और अे'जाजी तौर पर अल्लाह एउरुजल के ईजून व अता (या'नी  
ईज्जत व ईनायत) से शफ़ीअ व वसीला और हाजत रवा व  
मुशिकल कुशा मानते हें.

करमाने मुस्तफ़ा حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْآلِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस  
रहमते भेजता है. (स्)

## भुतों से मद मांगना शिर्क है

मुस्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुस्ती अहमद यार  
पान حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْآلِ وَسَلَّمَ : मुश्रिकीन का अपने भुतों से मद मांगना  
येह बिदकुल शिर्क है. (और येह शिर्क होना) इस लिये के वोह उन भुतों में  
भुदाई असर और उन को छोटा भुदा मान कर मद मांगते हैं और  
इसी लिये इन को इलाह या शु-रका (या'नी इबादत के लाईक या  
अल्लाह के शरीक) कहते हैं या'नी इन भुतों को अल्लाह का बन्दा और  
इर उलूहियत का डिस्सेदार मानते हैं. (जाल हक, स. 214)

## शिर्क की ता'रीफ़

शिर्क का मा'ना है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी को  
वाजिबुल वुजूह या मुस्तहिके इबादत (इबादत के लाईक) जानना  
या'नी उलूहियत में दूसरे को शरीक करना और येह कुफ़ की सब  
से बढ तरीन किस्म है. उस के सिवा कोई बात कैसी ही शदीद  
कुफ़ हो हकीकतन शिर्क नहीं. (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 183) मेरे  
आका आ'ला हजरत इमामे अहले सुन्नत मुजहिदे दीनो मिल्लत  
मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा पान حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْآلِ وَسَلَّمَ :  
“आदमी हकीकतन किसी बात से मुश्रिक नहीं होता जब तक  
गैरे भुदा को मा'बूद (या'नी इबादत के लाईक) या मुस्तकिल  
बिज़्जात (या'नी अपनी जात में गैरे मोहताज. म-सलन येह  
अकीदा रबना के इस का इल्म जाती है) व वाजिबुल वुजूह न  
जाने.” (इतावा र-अविय्या, जि. 21, स. 131) शर्ह अकाईद में है :

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : જો શખ્સ મુઝ પર દુરુદે પાક પઢેના ત્મૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (ખુદા)

“શિર્ક”, અલ્લાહ તઆલા કી ઉલૂહિય્યત મેં કિસી કો શરીક જાનના જૈસે મજૂસી (યા’ની આતશ પરસ્ત) અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કે સિવા વાજિબુલ વુજૂદ માનતે હેંં યા અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કે ઇલાવા કિસી કો ઇબાદત કે લાઈક જાનના જૈસે બુતોં કે પુજારી. (شرح عقائد کفریہ ص ۲۰۱)

મેં કુરબાં ઇસ અદાએ દસ્ત ગીરી પર મેરે આકા

મદદ કો આ ગએ જબ ભી પુકારા યા રસૂલલ્લાહ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ



તાલિબે ગમે મદીના  
વ બકીઅ વ મગ્ફિરત  
વ બે હિસાબ જન્નતુલ  
ફિરદૌસ મેં આકા  
કા પડોસ



16 ર-મજાનુલ મુબારક 1433 સિ.હિ.  
5-8-2012

## યેહ રિસાલા પઢ કર દૂસરે કો દે દીજિયે

શાદી ગમી કી તકરીબાત, ઇજતિમાઆત, આ’રાસ ઓર જુલૂસે મીલાદ વગૈરા મેં મક-ત-બતુલ મદીના કે શાએઅ કદા’રસાઈલ ઓર મ-દની ફૂલોં પર મુશ્તમિલ પેફ્લેટ તક્સીમ કર કે સવાબ કમાઈયે, ગાહકોં કો બ નિચ્ચતે સવાબ તોહફે મેં દેને કે લિયે અપની દુકાનોં પર ભી રસાઈલ રખને કા મા’મૂલ બનાઈયે, અખ્બાર ફરોશોં યા બચ્ચોં કે ઝરીએ અપને મહલ્લે કે ઘર ઘર મેં માહાના કમ અઝ કમ એક અદદ સુન્નતોં ભરા રિસાલા યા મ-દની ફૂલોં કા પેફ્લેટ પહોંચા કર નેકી કી દા’વત કી ધૂમેં મચાઈયે ઓર ખૂબ સવાબ કમાઈયે.

﴿كِرَامًا مِّن مَّا كُنْتُمْ تُكْفِرُونَ﴾: جِس کے پاس میرا جیک ہوا اور اُس نے مجھ پر دُرُودِ پاک نہ پڑا تَلْکِکِ  
 وولڈ بآء بآءت لآو گآآ۔ (١٠٠١)

## ફેહરિસ

ਉ-ਵਾਨ	ਅੰਕ	ਉ-ਵਾਨ	ਅੰਕ
ਦੁਰੁਦ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਕੀ ਝੰਜੀਵਤ	1	ਅ-ਸ਼-ਰਏ ਮੁਬਸ਼ਰਫ਼ ਕੇ ਅਸਮਾਏ ਗਿਰਾਮੀ	24
ਮੌਲਾ ਅਲੀ ਨੇ ਪਾਵੀ ਲਥੇਲੀ ਪਰ ਫਮ ਕਿਆ ਔਰ.....	1	ਖ਼ੁ-ਲਫ਼ਾਏ ਰਾਸ਼ਿਦੀਨ ਕੀ ਝੰਜੀਵਤ	24
ਕਟਾ ਚੁਵਾ ਛਾਥ ਖ਼ੋੜ ਦਿਆ	2	ਮਛਭਭਤੇ ਅਲੀ ਕਾ ਤਕਾਝਾ	25
ਕਰਾਮਤ ਕੀ ਤਾ'ਰੀਫ਼	3	ਕਮੀ ਕਮੀ ਘਾਸ ਨ ਲਗਨੇ ਕਾ ਅਨੌਯਾ ਰਾਝ	25
ਫਰਿਆ ਕੀ ਤੁਘਆਨੀ ਖ਼ਤਮ ਛੋ ਗਠ	4	ਅਲੀ ਕੀ ਝਿਆਰਤ ਠਭਾਫਤ ਹੈ	28
ਘਸ਼ਮਾ ਠਭਲ ਪਡਾ !	5	ਮੁਠੌਂ ਸੇ ਗੁਫ਼ਤ-ਗੂ	28
ਝਲਿਝ ਝਫਾ ਅਘਝ ਛੋ ਗਯਾ	7	ਠਭਤ ਕੇ ਮ-ਫਨੀ ਝੁਲ	30
ਔਲਾਫੇ ਅਲੀ ਕੇ ਸਾਥ ਚੁਸ਼ਨੇ ਸੁਲੂਕ ਕਾ ਭਫਲਾ	9	ਮੀਠੇ ਮੁਸ਼ਫ਼ਾ ਕੀ ਮੌਲਾ ਮੁਸ਼ਿਕੇਲ ਫੁਸ਼ਾ ਪਰ ਅਤਾਔਂ ਹੈਂ	31
ਨਾਮ ਵ ਅਫਕਾਭ	11	ਵਾਛ ! ਕਯਾ ਭਾਤ ਹੈ ਝਾਤੇਛੇ ਖ਼ੈਭਰ ਕੀ	31
ਛਝਰਤੇ ਅਲੀ ਕਾ ਮੁਖ਼ਤਸ਼ਰ ਤਆਰੁਫ਼	11	ਫੁਘਤੇ ਛੈਫਰੀ ਕੀ ਔਕ ਝਲਕ	33
“كَلِمَاتٍ مِّن مَّا كُنْتُمْ تُكْفِرُونَ” ਕਛਨੇ ਲਿਖਨੇ ਕਾ ਸਭਭ	13	ਅਲੀ ਝੈਸਾ ਕੋਠ ਭਛਾਫੁਰ ਨਛੀ	34
“ਅਭੂ ਤੁਰਾਭ” ਫੁਨਘਤ ਕਭ ਔਰ ਕੈਸੇ ਮਿਲੀ !	14	ਲੁਆਭ ਵ ਫੁਆਏ ਮੁਸ਼ਫ਼ਾ ਕੀ ਭ-ਰ-ਕੱਤੇ	34
ਲਛੇ ਭਰ ਮੈਂ ਕੁਰਆਨ ਖ਼ਤਮ ਕਰ ਲੇਤੇ	15	ਮੌਲਾ ਅਲੀ ਕਾ ਠਘਲਾਸ	35
ਮੌਲਾ ਅਲੀ ਕੀ ਸ਼ਾਨ ਭ ਝਭਾਨੇ ਕੁਰਆਨ	16	30 ਸਾਲ ਕੀ ਨਮਾਔਂ ਛੋਛਰਾਠ	36
ਘਾਰ ਫਿਰਛਮ ਖ਼ੈਰਾਤ ਕਰਨੇ ਕੇ 4 ਅਛਛਾਝ	16	ਤੁਮ ਮੁਝ ਸੇ ਛੋ	37
ਛਮਾਰਾ ਖ਼ੈਰਾਤ ਕਰਨੇ ਕਾ ਅਛਛਾਝ	17	ਤੁਮ ਮੇਰੇ ਭਾਠ ਛੋ	37
ਮੌਲਾ ਅਲੀ ਕੀ ਕੁਰਆਨ ਝਛਮੀ	19	ਸ਼ਛੈ ਛਫੀਸ	38
ਸੂਰਔ ਝਾਤਿਛਾ ਕੀ ਤਫ਼ਸੀਰ	19	ਸ਼ੇਰੇ ਖ਼ੁਦਾ ਕਾ ਠਝਕੇ ਮੁਸ਼ਫ਼ਾ	39
ਸ਼ਛਰੇ ਠਲਮੋ ਛਿਕਮਤ ਕਾ ਫਰਵਾਝਾ	19	ਸ਼ੇਰੇ ਖ਼ੁਦਾ ਕੀ ਖ਼ੁਦਾਛਾਛ ਖ਼ੂਬਿਘਾਂ	39
ਮੌਲਾ ਅਲੀ ਕੀ ਸ਼ਾਨ ਭ ਝਭਾਨੇ ਨਭਿਘਏ ਗੈਭਛਾਨ	20	ਮੌਲਾ ਅਲੀ ਮੋਮਿਨੌਂ ਕੇ “ਵਲੀ” ਹੈਂ	41
ਅਛਾਵਤੇ ਅਲੀ	21	ਘਛਾਂ “ਵਲੀ” ਸੇ ਕਯਾ ਮੁਰਾਛ ਹੈ ?	41
ਝਾਛਿਰੋ ਭਾਤਿਨ ਕੇ ਆਲਿਮ	21	ਘਾ ਅਲੀ ਮਛਛ ਕਛਨੇ ਕੇ ਫਲਾਠਲ ਝਾਨਨੇ ਕੇ ਲਿਘੇ.....	42
“ਅਲੀ” ਕੇ ਤੁਛੁਝੁਝ ਕੀ ਨਿਸ਼ਘਤ ਸੇ ਮੌਲਾ ਅਲੀ ਕੇ ਮਝੀਛ ਤੁਝਝਠਲ	22	ਅਛਲੇ ਭੈਂਤ ਸੇ ਮਛਭਭਤ ਕੀ ਝੰਜੀਵਤ	43
ਸਛਛਾਭਾ ਕੀ ਝੰਜੀਵਤ ਮੈਂ ਤਰਤੀਭ	22	ਘਰਾਨਔ ਛੈਫਰ ਕੀ ਝੰਜੀਵਤ	44

﴿قرمانے मुस्तफا علی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم﴾ : जिस ने मुज पर अक बार दुइटे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रउमतें बेजता है. (प्त)

तुम्हारी दाढी पून से सुर्ष कर देगा	45	“अल्लाह के बन्दों” से मुराद कौन लोग हैं?	69
तीन पारिजियों की तीन सलाबा के बारे में साजिश	46	मुहँ से मदद क्यूं मांगें?	69
ईबने मुल्लम की बढ बपत्ती का सबाब ईशके मज्जा हुवा	47	अम्बियाओ किराम الصَّلوة وَالسَّلَام عَلَيْهِمُ ज़िन्दा हैं	70
शहादत की रात	47	हजरते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام मज्जा पढ रहे थे	71
कातिलाना हम्वा	48	औलियाउल्लाह भी ज़िन्दा हैं	71
ईबने मुल्लम की वाश के टुकड़े नज़रे आतश कर दिये गये	49	हयाते अम्बिया और हयाते औलिया में फर्क	73
बा'दे मौत कातिले अली की सजा की दरज़ा भैः छिदायत	49	मय्यित की ईमदाद कवी तर है	74
शह्वत की पैरवी का दर्दनाक अन्जाम	51	गैरुल्लाह से मदद मांगने के मुतअख्लिक शाकेई मुफ्ती का इतवा	75
सलाबाओ किराम की शान	51	महूम नौ जवान ने मुस्तुरा कर कडा के.....	75
म-दनी माडोल से वाबस्ता रहिये	53	पुढा عَزُّو كَلُّو का हर प्यार ज़िन्दा है	76
बढ अकी-दगी से तौबा	53	“या अली मदद” कइने का सुभूत	77
गैरुल्लाह से मदद मांगने के बारे में सुवाल जवाब	56	अगर “या अली” कइना शिर्क हो तो.....	78
हजरते अली को मुशिके ल कुशा कइना कैसा है ?	56	“या गौस” कइने का सुभूत	79
“मौला अली” कइना कैसा ?	57	गौसे पाक के तीन ईमान अफरोज ईशार्दात	81
जिस का मैं मौला हूँ उस के अली भी मौला हूँ	58	जन्तती हूर का दूसरी जवानों सभज लेना	82
“मौला अली” के मा'ना	58	हदीसे पाक की ईमान अफरोज शर्ह	82
मुफ्स्सिरिन के नजदीक “मौला” के मा'ना	59	जब अल्लाह मदद कर सकता है तो दूसरे से मदद क्यूं मांगें?	84
“أَيُّهَا كَسْبَعِيْنُ” की बेहतरीन तशरीह	60	ओई फदेबशर गैरे पुढा की मदद के बिगैर रह ही नहीं सकता !	86
गैरे पुढा से मदद मांगने की अलादीसे मुबा-रका में तरगीब	63	50 की जगल पांय नमाजें कैसे हुई ?	87
नाबीना को आंभें मिल गई	64	जन्तत में भी गैरुल्लाह की मदद की हाजत	88
“या रसूलुल्लाह” वाली दुआ की ब-र-कत से काम बन गया	65	क्या गैरुल्लाह से मदद मांगना कभी वाजिब भी होता है?	89
बा'दे वफात आका ने मदद करमाई	66	वोह मकामात जहां मदद मांगना वाजिब है	90
अै अल्लाह के बन्दो ! मेरी मदद करो	67	वोह मकामात जहां मदद करना वाजिब है	90
जंगल में ज़ानवर भाग ज़ाओ तो.....	68	भुतों से मदद मांगना शिर्क है	94
जब उस्तादे मोहतरम की सुवारी भाग गई !	68	शिर्क की ता'रीक	94

کراماتے شہرہ ہمدانی : حَسْبِيَ اللَّهُ نَعَىٰ عَنْهُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ وَسِعَتْ كُرْسِيُّهُ ۗ وَرَبِّيَ الرَّحْمَنُ ۗ عَلَّمَ الْقُرْآنَ ۗ خَلَقَ الْإِنسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۗ وَرَبُّكَ الْكَرِيمُ ۗ (طہ) (محل گیا)

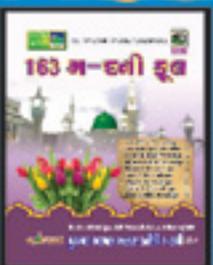
### مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن پاک	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	دلائل النبوة	دارالکتب العلمیہ بیروت
تفسیر طبری	دارالکتب العلمیہ بیروت	الطحاوی التفسیری	دارالکتب العلمیہ بیروت
تفسیر قرطبی	دارالفکر بیروت	جزء الحسن بن علی عن عبد العزیز	مکتبہ دارالافتاء کویت
تفسیر کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	معرفۃ الصحابہ	دارالکتب العلمیہ بیروت
تفسیر بیضاوی	دارالفکر بیروت	المواہب اللدیۃ	دارالکتب العلمیہ بیروت
تفسیر ابن کثیر	دارالفکر بیروت	تاریخ دمشق	دارالفکر بیروت
تفسیر ابن کثیر	دارالکتب العلمیہ بیروت	اسد الغابہ	دار احیاء التراث العربی بیروت
تفسیر خازن	مصر	تاریخ الخلفاء	باب المدینہ کراچی
تفسیر نعیمی	دارالکتب العلمیہ بیروت	ازلیۃ الخلفاء	باب المدینہ کراچی
تفسیر علامین	باب المدینہ کراچی	الشفاء	مرکز اہلسنت برکات رضابند
تفسیر روح البانی	دار احیاء التراث العربی بیروت	اخباؤ الانبیاء	فاروقی انڈیا کمپن پاکستان
تفسیر خزائن العرفان	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	حجۃ اللہ علی العالمین	مرکز اہلسنت برکات رضابند
بخاری	دارالکتب العلمیہ بیروت	شولہ الحق	مرکز اہلسنت برکات رضابند
مسلم	دار ابن کثیر بیروت	شواہد النبوة	مکتبہ تحقیقہ استنبول
ترمذی	دارالفکر بیروت	الترجمہ الکبیر	مؤسسۃ لکنتہ الثقافیہ بیروت
ابن ماجہ	دار المعرفہ بیروت	قوت القلوب	دارالکتب العلمیہ بیروت
مسند امام احمد	دارالفکر بیروت	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
مجموع کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	رسالہ تفسیریہ	دارالکتب العلمیہ بیروت
مجموع اوسط	دارالکتب العلمیہ بیروت	الاذکار	دارالکتب العلمیہ بیروت
مجموع سفیر	دارالکتب العلمیہ بیروت	مصباح الطلاب	المدینہ المنورہ
مسند ابی یعلیٰ	دارالکتب العلمیہ بیروت	شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضابند
مصنف ابن ابی شیبہ	دارالفکر بیروت	راحت القلوب	فیاء القرآن مرکز الاولیاء لاہور
متحدک	دار المعرفہ بیروت	عیون النکاحات	دارالکتب العلمیہ بیروت
حلیۃ الاولیاء	دارالکتب العلمیہ بیروت	سوانح کربلا	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی
مسند القردوس	دارالکتب العلمیہ بیروت	جاء الحق	نعمتی سب خانہ گجرات
جامع الاصول فی احادیث الرسول	دارالکتب العلمیہ بیروت	کرامات صحابہ	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی
الجامع الصغیر	دارالکتب العلمیہ بیروت	قصیدۃ تھانیہ لیسیر الخیرات الحسان	مکتبہ تحقیقہ استنبول
مسند الشہاب	مؤسسۃ الرسالۃ بیروت	جماعہ غرہ	باب المدینہ کراچی
فتح الباری	دارالکتب العلمیہ بیروت	قادی رنی	دارالکتب العلمیہ بیروت
مرقاۃ المفاتیح	دارالکتب العلمیہ بیروت	فتاویٰ رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
احیاء المدعات	کویت	لقنونات اعلیٰ حضرت	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی
مرآۃ المناجیح	فیاء القرآن جمعیۃ تفسیر مرکز الاولیاء لاہور	بہار شریعت	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی
الحرز العین	مخطوطہ	وسا علیٰ بخشش	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی

## سुन्नत की बहारें

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ तबदीगी कुरआनो सुन्नत की आवलमगीर जैर सियाखी तहरीक द्वा'वते ईस्लामी के मडके मडके म-दनी माडोल में अ कसरत सुन्नतें सीपी और सिपाई जती हें, हर जुमा'रात ईशा की नमाज के भा'द आप के शहर में छोने वाले द्वा'वते ईस्लामी के हकतावार सुन्नतों भरे ईजतिमाज में रिआये ईलाही के लिये अखरी अखरी निप्यतों के साथ सारी रात गुजारने की म-दनी ईजतिमाज है. आशिकाने रसूल के म-दनी कफिलों में अ निप्यते सवाब सुन्नतों की तरबिप्यत के लिये सहर और रोजाना किंके मदीना के जरीये म-दनी ई-आमात का रिआवा पुर कर के हर म-दनी माड के ईज्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने पहां के जिम्मेदार को जम्ब करवाने का मा'मूल बना लीजिये, **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** ईस की अ-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नकरत करने और ईमान की छिफाजत के लिये कुहन अ जेहन बनेगा.

हर ईस्लामी भाई अपना येह जेहन बनाये के "मुजे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की ईस्वाह की कोशिश करनी है. **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ**" अपनी ईस्वाह की कोशिश के लिये "म-दनी ई-आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की ईस्वाह की कोशिश के लिये "म-दनी कफिलों" में सहर करना है. **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ**



### मड-त-अतुल मदीना की शाखें

सूरत : वलियाभाई मस्जिद, प्वाज्र दाना दरगाह के पास. 9898615071

जामनगर : पांच छाटडी, 9327977293

भोडासा : सुका बजर, 9725824820

गांधीधाम : सपना नगर, मदीना मस्जिद के पास, 8141474279

धोलका : ताजदारे मदीना मस्जिद के सामने, टावर बाजार, 9374915797

**मड-त-अतुल मदीना**  
द्वा'वते ईस्लामी



सिलेस्टेड हाईस, अविड़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा, अहमदआबाद-1 गुजरात, इन्डिया  
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawatelislami.net